9412

तित्थयर

॥ जैन भवन ॥

वर्द्धमान महावीर माता त्रिशला की गोद में

आचार्य श्री कैलास सागर सूरि ज्ञान मन्दिर
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र,
कोबा, जि. गांधीनगर, पीन-३८२००९

वर्ष : २६ अंक : ८
नवम्बर २००२

ज्ञान से पदार्थों को जाना जाता है,
दर्शन से श्रद्धा होती है,
चारित्र से कमास्त्रव की रोक होती है,
और तप से शुद्धि होती है।

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Groundnut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant
Post Box No. 5
Lucknow Road
Sitapur - 261001 (U.P.)
Ph: 42017/42397/42073
(05862)
Gram - Sethia - Sitapur
Fax: 42790 (05862)

Registered Office
143, Cotton Street
Kol - 700 007
Ph: 238-4329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office
2, India Exchange Place
Kolkata - 700 001
Ph: 2201001/9146/5055
Telex: 217149 SOIN IN
FAX: 2200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - २६ अंक - ८, नवम्बर २००२

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये
पता - Editor : Titthayar, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Phone : 238-2655, e-mail : jbhawan@cal3.vsnl.net.in

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें —
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Subscription for one year : Rs. 55.00, US$ 20.00,
for three years : Rs. 160.00, US$ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Smt. Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone : 238-2655
and Printed by her at Arunima Printing Works, 81, Simla Street
Kolkata - 700 007 Phone : 241-1006

संपादन
श्रीमती लता बोथरा

|| जैन भवन ||

Jainology and Prakrit Research Institute

Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007.

Phone-238-2655. e-mail - jbhawan@cal3.vsnl.net.in.

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	लेख	लेखक	पृ. सं.
१.	कर्म की कहानी	पन्यासप्रवर श्री सुयश मुनि जी	३३९
२.	तमिलनाडु में जैन धर्म		३४३
३.	कुण्ड कोलिक श्रावक	श्रीनरेन्द्र सिंह जैन	३५१
४.	श्री चन्द्रराज चरित्र		३६२

कवरपृष्ठ : स्वर्गीय हीराचन्द दुगड़ द्वारा चित्रित एवं श्री जयन्त दूगड़ के सहयोग से प्राप्त चित्र में भगवान् महावीर माता त्रिशला की गोद में।

Composed by:

Jain Bhawan Computer Centre, P-25, Kalakar Street Kolkata - 700 007

कर्म की कहानी

पन्यासप्रवर श्री सुयश मुनि जी

यहाँ देव-देवी २४ तीर्थंकर के यक्ष-यक्षिणी जैसे-चक्रेश्वरी, पद्मावती, सिद्धायिका, धरणेन्द्र तथा समकितदेव जैसे-भोमीयाजी, घन्टकर्ण, मणिभद्र, भैरव आदि समझे।

अन्तिम अष्ट मंगल में चन्दन लगाकर दो हाथ से पकड़कर भगवान के समक्ष रखे। याद रहे यह पूजन का एक साधन है। मंगल की कामना से पूजा के अन्त में प्रभु के सम्मुख आलेखन करने का है। वर्तमान समय में आलेखन करना सब के लिये संभव न होने के कारण धातु को तैयार करके रखा जाता है।

पुष्प पूजा—उत्तमजाति, सुगन्धमय पुष्पों से चन्दन पूजा के बाद पुष्प पूजा करें। मुझाया हुआ, जमीन पर पड़ा हुआ, किसी के सूंघे हुए फूल की कली और बासी पुष्पों से पूजा करना निषेध है।

पहले के जमाने में पुरुष स्वयं के पुष्पोद्याम से विधिवत् पुष्प लाकर ही परमात्मा की पूजा करते है। आज के समाज में सभी व्यक्ति के पास इस प्रकार की व्यवस्था करना संभव नहीं है। फिर भी प्रत्येक परमात्मा के परमभक्त के भक्ति के प्रतीक रूप २/४ पुष्प कुंड तो अपने घर में अवश्य ही लगाना चाहिए, जिससे रोज शुद्ध पुष्प से पूजा हो सके और घर का पर्यावरण भी शुद्ध हो जाता है। पुष्प के आस-पास पलते बच्चे भी जल्दी विकसित होते हैं। किसी कारण से स्वयं अगर पूजा न कर सके तो मंदिर पहुँचाकर अन्य से पूजा करावें। फूल को अखंड ही रहने देवें। माला बनाने के लिए फूलो को सूइ से छेद न करें। जहाँ तक संभव हो व्यवसायिक व्यक्ति प्रभु के अंग पूजा के लिए फूल न खरीदें।

थाली में पुष्प लेकर निम्नोक्त दोहा बोलकर पूजा करें— मनोर्हत .....

सूरभी अखंड कुसुमग्रही, पूजोगत संताप ।

सुमजंतु भव्यज परे, करीये समकित छाप।।

ॐ ह्रीं .... पुष्पं यजामहे स्वाहा ....।

हे प्रभु ! जिस प्रकार पुष्प आदरणीय सर्वप्रिय, सर्वत्र सुगन्ध फैलाने वाला है वैसा ही मैं बनूं ऐसी शक्ति प्रदान करें।

प्रभु की पूजा ऐसे शुभ भाव से करे कि जीवन में आमूल परिवर्तन आ जावें। परम्परागत विधि से एक जीवन नहीं अनेक जीवन पूजा करने पर भी कोई आन्तरिक परिवर्तन आने की संभावना नहीं है। और आन्तरिक परिवर्तन के विना जीवन का वास्तविक आनन्द मिलना मुश्किल है।

प्रभु के भाव पूर्वक पूजा के सम्बन्ध में एक प्राचीन कथा याद आ रही है। एक था मोटिया सेठ। मोटिया उसका इसलिए नाम पड़ा था क्यों कि वे मोट बाँधकर मिर्चा बेच कर अपना जीवन निर्वाह करता था।

सेठ धनवान था। व्यापार भी सुन्दर चलता था। अपूर्व प्रभु भक्ति थी। सर्वोत्तम पदार्थ से नित्य भगवान की पूजा करता था। लड़का बड़ा होने पर उन्हें व्यापार का सम्पूर्ण कार्यभार देकर अधिक समय प्रभु भक्ति में बिताने लगा। अब व्यापार बच्चो के हाथ था। धर्म धन खर्च करना उन्हें अच्छा नहीं लगा। एक दिन पुत्रों ने पिताजी को बुलाकर पूजा में इतना अधिक खर्च करने पर प्रतिबन्ध लगा दिया। प्रभु भक्त श्रावक यह बात कैसे सह सकते थे। घर बार छोड़कर निकल गये। मोट में मिर्चा लेकर बेचने लगे। इसमें मात्र दो पैसे कमाते। इसमें से एक पैसा पूजा में लगाते और एक पैसा से अपना निर्वाह करते। इससे सेठ को और अधिक आनन्द मिलने लगा। कभी-कभी पूजा में संसार का सब कुछ भूल जाते थे। एक दिन शासन देव धरणेन्द्र इनकी भक्ति से प्रसन्न होकर आये और कुछ माँगने के लिये बोले ....। पर सेठ तो प्रभु का परम भक्त मोक्ष के सिवाय और कुछ कामना नहीं थी। देव से कहे..........अगर तुम कुछ दे सकते हो तो मुझे मोक्ष दे दो। धरणेन्द्र बोले.........सेठ जी वह तो देने में मैं असमर्थ हूं। सेठ बोले फिर मुझे कुछ भी नहीं चाहिए। देव प्रसन्न होकर बोले देव का दर्शन तो निश्फल नहीं जाता है। मैं आपको एक धन का भंडार बना देता हूँ। आप के पुत्र आपके आने के बाद दरिद्र हो गये हैं। आप उनके पास जाइए और धन का सहयोग देकर उन्हें धर्म

मार्ग में स्थिर करें। सेठ ने देव द्वारा बताए हुए धन को देकर पुत्रों को धर्म मार्ग में स्थिर किया। पुत्र भी अब समझ गये कि धर्म के बिना ही हमारी यह दुर्गति हुई थी।

धूप पूजा — अगरबत्ती जलाकर हाथ में लेकर निम्नोक्त दोहा बोलकर धूप पूजा करें।

नमोर्हत् ....

ध्यान घटा प्रगटावीये, वामनयन जिन धूप।

मिच्छत्त दुर्गंध दूर टले, प्रगटे आत्म स्वरूप।।

ॐ ह्रीं .... धूपं यजामहे स्वाहाः ।

धूप पूजा करते समय इस प्रकार की भावना मन में लावे।

हे प्रभु! इस धूप के प्रभाव से जैसे दुर्गंध दूर हो जाती है और चारों ओर सुगन्ध फैल जाती है। वैसी ही मेरी आत्मा से मित्थ्यात्व रूपी दुर्गंध दूर हो और आत्मा का जो शुद्ध स्वरूप है वह प्रगट हो।

हे परमतारक.............। धूप जलकर जैसे उर्धगामी होता है, सुगन्ध ऊपर फैलता है और राख नीचे छोड़ देता है, वैसे ही मेरी हृदय की भावना ऊपर की ओर यानि शुद्धता की ओर भक्ति, प्रेम, दया, क्षमा, नम्रता को प्राप्त करें। अशुभ दुष्कर्म को त्याग करें।

गभारा के बाहर ही रंग-मंडप में रहकर खड़ा - खड़ा धूप पूजा करें। प्रतिमा के करीब धूप कभी भी न ले जावे। धूपदाणी में अगर धूप जल रहा हो तो दूसरा धूप न जलावे। धूपदाणी प्रभु के बाँयी ओर ही रखें।

दीपक पूजा — घी का दीपक शुद्ध कपास का वाट बनाकर जलाकरके भगवान के दाहिने भाग में खड़ा होकर निम्नोक्त दोहा बोलकर दीपक पूजा करें।

नमोर्हत् ....

द्रव्य दीपक सुविवेक से, करते दुःख होय फोक।

भाव प्रदीप प्रगट हुए, भाषित लोकालोक।।

ॐ ह्रीं .... दीपं यजामहे स्वाहा : ।

दीपक पूजा करते समय इस प्रकार की भावना से मन को उल्लसित करें।

हे प्रभु! तेरे सामने विवेक पूर्वक दीपक पूजा कर रहा हूँ। जैसे दीपक अन्धकार को नाश करके प्रकाश चारों ओर फैलाता है, वैसे ही मेरे जीवन का दुःख दर्द नष्ट करके ज्ञानरूपी प्रकाश जगावे और अनुक्रम में आत्म की परमशक्ति केवलज्ञान की उपलब्धि हो ऐसा सन्मार्ग दिखावे। मंदिर में शुद्ध घी का दीपक करें। दीपक भगवान के दाहिने तरफ रखें। दीपक जलते हुए को जीव की हिंसा न हो इसलिए अतिरिक्त समय में एक जालीदार ढक्कन ढककर रखें। कोई ढकने की व्यवस्था न हो तो दीपक में इतना ही घी देवे कि आपकी पूजा विधि समाप्त होते होते दीपक स्वयं बुझ जाय। दीपक कभी भी प्रयत्न पूर्वक न बुझावें।

अक्षत पूजा — थाली में या हाथ में शुद्ध, अखंड चावल लेकर निम्नोक्त दोहा बोलकर अक्षत पूजा करें .... ।

नमोर्हत् ....।

शुद्ध अखंड अक्षत ग्रही नन्दावर्त विशाल।

पुरो प्रभु सम्मुख रही, टाली सकल जंजाल।।

ॐ ह्रीं .... अक्षतं यजामहे स्वाहाः।

अक्षत पूजा करते समय इस प्रकार की भावना लावें।

हे प्रभु........! अत्यंत पवित्र, अखंडित चावल से आपके सामने स्वास्तिक/नन्दावर्त करके मोक्षरूपी अक्षय सुख की कामना करता हूँ।

हाथ में चावल लेकर निम्नोक्त चित्र के अनुसार प्रथम ५ (पांच) ढेर बनायें। इसमें प्रथम सथिया (स्वास्तिक) बनाकर सिद्ध शिला बनावें।

क्रमशः

तमिलनाडु में जैन धर्म

तमिलनाडु की भौगोलिक स्थिति संकेत देती है कि यहाँ जैन धर्म की शुरुआत या तो आंध्र प्रदेश से हुई या कर्नाटक से। सामान्यतः इसी विचारधारा को समर्थन मिलता है कि कर्नाटक से जैनधर्म यहाँ आया, क्योंकि भद्रबाहु की कर्नाटक यात्रा और उनकी सुव्यवस्थित जैन परम्परा की स्थापना से विद्वानों को काफी समर्थन मिला। परन्तु पहली विचारधारा अर्थात् आंध्र प्रदेश से जैनधर्म तमिलनाडु में आया, भी आधार हीन नहीं है। पाँचवी शताब्दी में लिखित बौद्ध धर्मग्रंथ महावंश में राजधानी अनुराधापुर में नए निर्माण के वर्णन के संदर्भ में यह उल्लेख मिलता है कि राजा पांडुकभाय ने निग्रंथ जाति के लिए एक भवन का निर्माण करवाया। उसमें आगे यह भी उल्लेख मिलता है कि निग्रंथ कुंभंड के लिए एक मठ भी बनवाया। पांडुकभाय का शासन ईसा पूर्व ४०० वर्ष पहले था (ईसा पूर्व ३३७-३०७) अतः निग्रन्थ (जैन सन्यासी) के निवास एवं मठ बनाए जाने की उपर्युक्त घटनाएँ सिंहली इतिहास के आदिकाल की ओर निर्देशित करती हैं। इससे यह ज्ञात होता है कि सिलोन के उत्तरी भाग में जैनियों ने अपने को स्थापित किया था और राजधानी में ये आदरणीय थे। इससे यह भी संकेत मिलता है कि ईसा पूर्व ४०० वर्ष पहले ही तमिलनाडु जैनियों के सम्पर्क में आ गया था।

इस संदर्भ में हमें यह भी देखने को मिलता है कि कर्नाटक की एक जैन परम्परा ने जिसका वर्णन बाद के साहित्य में किया गया है, तमिलनाडु में जैनों की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका प्राचीनकाल में निभाई। मैसूर राज्य के कंकगिरि अथवा मलेयुरु के निवासी एवं ईसा पूर्व की अंतिम सदी के जैन लेखक देवचन्द्र ने अपने संकलित ग्रंथ राजवली कथा में विभिन्न प्राचीन आख्यानों और शासकों की परम्परा के विषय में व्यापक रूप से उल्लेख किया है। भद्रबाहु और चन्द्रगुप्त के मैसूर आगमन के उल्लेख के बाद उक्त ग्रंथ में यह वर्णन मिलता है कि मरते समय भद्रबाहु ने अपने शिष्य

और जैन सन्यासियों के प्रमुख विशाखाचार्य को चोल पाँड्य देश से भी आगे बढ़ने का निर्देश दिया था। भद्रबाहु का निधन ई० पू० तीन सौ वर्ष पहले (२९७ ई० पू०) हुआ था।

१५वीं सदी में रत्ननंदी अपनी संस्कृत पुस्तक भद्रबाहु चरित्र में लिखते है कि भद्रबाहु के शिष्य विशाखाचार्य ने अपने गुरु के आदेशानुसार चोल देश में जैनों का नेतृत्व किया। मद्रास राज्य के पुदुकोट्टइ, मदुरा और तिन्नेवेलि जिलों के पर्वतीय क्षेत्रों में कई ऐसी गुफाओं की खोज हुई है जिनमें गुफावासी जैनियों की मूर्तियाँ उनके विवरण सहित पत्थरों में चित्रित हैं।

मदुरा और तिन्नेवेलि जैन परम्परा की प्राचीनता के लिए विशेष उल्लेखनीय क्षेत्र हैं। ये प्रस्तर मूर्तियाँ काफी सरल और पवित्र दिखती हैं जो इस सम्प्रदाय की प्राचीन संस्कृति के दिक्दर्शक नमूने हैं। प्राचीन लिपि में उपलब्ध शिलालेखों के आधार पर जैन सम्प्रदाय के लोगों की संगति और उन स्मारकों का काल निर्धारण संभव हो पाया है। ब्राह्मी लिपि में लिखित इन पुरातत्व के नमूनों से यह स्वीकार किया जा सकता है कि ई० पू० तीन सौ वर्ष पहले के ये हो सकते हैं। परिवेश और संगति के आधार पर यह माना जा सकता है कि ये गुफावासी जैन सम्प्रदाय से ही संबंधित थे। अतएव इसे स्वीकारने में कोई हर्ज नहीं हो सकता कि आंध्र प्रदेश में अपनी पहुँच बनाने के बाद उनके समर्थकों ने तमिल देश के भीतरी भाग तक प्रवेश किया होगा। तेलगू क्षेत्र के समीप तमिल राज्य के उत्तरी क्षेत्र अरकोट की पहाड़ियों पर जैन स्थापत्य कला से संबंधित उपलब्ध प्राचीन ऐतिहासिक प्रस्तर मूर्तियाँ प्रमाण स्वरूप मुखर हैं। जैन धर्म के उपदेशक क्रमशः प्रचार-प्रसार करते हुए तमिलनाडु के सुदूर दक्षिण तक पहुँच गए। फिर इन्होंने समुद्र पार कर सिलोन तक अपनी पैठ बना ली। यह धार्मिक प्रयाण लगभग ई० पू० ५००-६०० वर्ष पहले ही हुआ होगा। जैन गुरुओं का दूसरा दल संभवतः ई० पू० ३०० वर्ष पहले कर्नाटक से तमिलनाडु क्षेत्र की ओर बढ़ा होगा। ये भद्रबाहु की जमात के थे। विशाखाचार्य के नेतृत्व में ये अपने गुरु के अंतिम वचन के परिपालन में जुटे थे। इन नए दलों के प्रवाह ने तमिल देश में जैन सम्प्रदाय के व्यापक प्रचार को काफी गति दी। वैसे तो पूरे

तमिल देश में जैनों का प्रभाव बढ़ा, परन्तु विशेषतः दक्षिणी भाग में ये काफी शक्तिशाली हो गए। ऐसा इस आधार पर कहा जा सकता है कि उत्तरी क्षेत्र की तुलना में मदुरा और तिन्नेवेलि की पहाड़ियों तथा अन्य जगहों पर शिलालेख, स्मारक आदि बहुतायत से पाए जाते हैं।

जैन धर्म के गढ़

काँची क्षेत्र– कांची या काँची क्षेत्र मोटे तौर पर वर्तमान चिंगिलपुट प्राचीनकाल से ही जैन धर्म का प्रमुख केन्द्र प्रतीत होता है। यह क्षेत्र पल्लव शासन का मुख्य केन्द्र था। ४थी शताब्दी से ८वीं शताब्दी तक यह अंचल पल्लव शक्तिस्थल बना रहा। आधुनिक मद्रास नगर का एक भाग पहले मैलापुर नाम से प्रसिद्ध था। यहां बहुसंख्यक लोग जैन मतावलंबी थे। पहली शताब्दी के महान तमिल ग्रंथ तिरुकुरल के लेखक तिरुवल्लुवर का निवास स्थान यही था। वे जैन धर्मावलंबी थे।

जहाँ तक काँचीनगर की बात है यह पल्लवों की राजधानी थी। इसकी खास विशेषता यह है कि यह नगर कई शताब्दियों तक जैन संस्कृति का प्रमुख केन्द्र रहा। यहां केवल जैन सिद्धान्तों को प्रोत्साहन के लिए पल्लवों की सहायता मिली ऐसी बात नहीं बल्कि राजघराने के प्रमुख व्यक्ति इस मत के अनुयायी भी बन गये। इसके प्रसिद्ध उदाहरण महेन्द्र वर्मन प्रथम हैं जो जैन धर्म के कट्टर समर्थक थे। उन्होंने सातवीं सदी के प्रथम चरण में शासन किया था।

आधुनिक कांजीवरम् से लगभग दो मील की दूरी पर जिन कांची के रूप में विख्यात तिरुप्पारुत्तिक्कुरम् आज भी वर्तमान है। आज भी यहाँ तत्कालीन जैन सम्प्रदाय का एक मंदिर अवस्थित है। इस मंदिर में प्रमुख मूर्ति भगवान महावीर की है जिन्हें त्रैलोक्य स्वामी भी कहा जाता है। कलात्मक चमत्कार से परिपूर्णतः सुसज्जित यह सबसे बड़ा मंदिर है। यह कांजीवरम तहसील में है। इस मंदिर में जैन पंथियों की अन्य कई मूर्तियां भी सुरक्षित हैं।

काँची के आसपास– काँची के आसपास के गाँवों में पहाड़ियों पर पत्थर की मूर्तियाँ विद्यमान हैं। आनन्द-मंगलम् में पायी गई मूर्तियाँ जैन सम्प्रदाय के अस्तित्व का तथ्य उजागर करती हैं। एक दूसरी पहाड़ी पर भी

एक जैन मूर्ति मिली है जिसके इर्द-गिर्द कई जैन अवशेष चित्रित हैं। अरपक्कम् मगराल, आर्यपेरुम्बकम, विषहर और सिरुवक्कम गाँवों में भी जैन पंथ से संबंधित पुरातात्विक अवशेष खोज निकाले गए हैं। अरपक्कम में एक ऐसा मंदिर है जो आदि भट्टालंकार को समर्पित है। इसमें अरुगर का उल्लेख है। जो अर्हत का तमिलभाषा रूप है।

उत्तर आरकोट : काँची क्षेत्र से हम पहले पश्चिम की ओर बढ़ते हैं और फिर दक्षिण की ओर हम प्रवेश कर जाते हैं पंच पाण्डवम्लाइ तथा तिरुमलै के भीतरी भाग में जो मोटे तौर पर वर्तमान उत्तर आरकोट में पड़ता है। मलई शब्द का अर्थ पहाड़ से है।

आरकोट शहर से लगभग चार मील दक्षिण पश्चिम की तरफ पंचपाण्डव पहाड़ी उपस्थित है। तिरुप्पा मलए एक दूसरी पहाड़ी भी वहीं है। इस पहाड़ी में दो गुफाएँ हैं। इनमें शिलालेख तथा वास्तुकला के प्रमाण हैं। इससे अनुमान होता है कि पंचपाण्डवमलय का क्षेत्र कभी जैन सम्प्रदाय की प्रतिष्ठापना का क्षेत्र रहा होगा। विलपक्कम गाँव में तीर्थंकर की मूर्ति का पता चला है। यह गाँव पंचपाण्डव मलय से करीब एक मील दक्षिण पश्चिम में स्थित है। परन्तु इस मूर्ति से भी अधिक उल्लेखनीय आकर्षण गाँव में प्राप्त नागनाथेश्वर मंदिर का है। यहाँ ९४५ ई० काल का शिलालेख हैं जिसमें पुत्तनी कुरती आदिगल द्वारा कुआँ खुदवाने का उल्लेख है। इस कुएँ को भरकर भवन सहित सन्यासिनों का आवास स्थल बना दिया गया। गाँव के २४ पर्यवेक्षकों की निगरानी में इस साध्वी मठ को रखा गया। जैसा कि नाम से प्रतीत होता है पुत्तिनीकुरती आदिगल एक प्रसिद्ध महिला उपदेशिका थीं।

पंच पाण्डवमलय से कुछ मील उत्तर की दिशा में एक दूसरी पहाड़ी है। यह वल्ली मलय गाँव के समीप है। इसमें प्राकृतिक सौन्दर्य से पूर्ण गुफाएँ हैं। ये पूर्व की ओर ढलान वाली है जिनमें दो जैन मूर्तियाँ गुफाओं से संश्लिष्ट हैं।

अब हम दक्षिण दिशा में एक ऐसी दूसरी पहाड़ी की ओर बढ़ते हैं जो जैन धर्म की प्राचीन परम्परा के लिए विख्यात था। यह पहाड़ी पोलुर से करीब १० मील दूर तिरुमलय गाँव के समीप ही है। इस गांव में इस समय भी बहुत जैन मतावलंबी रहते हैं। जैन सम्प्रदाय की प्राचीन परम्परा का एक

ऐतिहासिक प्रमाण विद्यमान है जो एक पहाड़ी अंचल का चित्रण हैं।। इस चित्रकारियों में मुख्य आकर्षणीय चित्रण एक चक्र का है जिसके मध्यभाग में जिन मूर्ति चित्रित हैं। उनके कमानों के मध्य पूजा अर्चना में लीन जैन भक्तों का चित्रण विलक्षण रूप में किया गया है। यह पहिया धर्मचक्र का प्रतीक है।

उत्तरी आरकोट जिले के वंदिवाश तहसील में दो दर्शनीय स्थल हैं। ये दोनों स्थान जैन संस्कृति के मंदिरों के लिए प्रसिद्ध हैं। विदल गाँव के समीप ही एक पहाड़ी है जिसके टीले जैन परम्परा के प्राचीन प्रामाणों का भंडार है। पल्लव शासनकाल से संबंधित एक शिलालेख में वर्णित विदल एवं विदलपल्लवी शब्दों से ज्ञात होता है कि यहाँ जैन मठ रहे होंगे।

पोन्नुर में जैन धर्म से संबंधित ऐतिहासिक प्रमाणों को आज भी संरक्षित रखा गया है। निश्चय ही यह स्थान जैन धर्म का प्रमुख केन्द्र रहा होगा। यहाँ आदिनाथ तीर्थंकर का एक भव्य मंदिर है जो कनकगिरि की घाटी में स्थित है। इसमें तीर्थंकरों की धातु की बनी मूर्तियाँ भी हैं। ये मूर्तियाँ अभी भी सजीव हैं। दूसरे-दूसरे देवों की मूर्तियाँ भी अवस्थित हैं। इनमें ज्वालामालिनी की मूर्ति उल्लेखनीय स्वरूप में विद्यमान है। पोन्नुर से करीब तीन मील उत्तर पश्चिम दिशा में नीलगिरि नामक पहाड़ी है। इसकी चोटी पर हेलाचार्य की मूर्ति स्थापित है। वे पूजा करने की मुद्रा में हैं। जैन धर्म से संबंधित साहित्य के अनुसार इस मूर्ति का नाम इलाचार्य होना चाहिए जो शायद उच्चारणगत भेद के कारण हेलाचार्य के नाम से जाना जाता है। उक्त साहित्य के अनुसार यह पुष्ट होता है कि इलाचार्य का ज्वालामालिनी के साथ घनिष्ठ संबंध था। इलाचार्य द्रविड़ गण के प्रमुख गुरु थे। ये हेमग्राम के निवासी थे। यह गाँव इस देश के दक्षिणी अंचल में था। ऐसा कहा जाता है कि अपनी एक शिष्या को एक ब्रह्मराक्षस (दुष्टात्मा) के चंगुल से मुक्त कराने के लिए उन्होंने इसी नीलगिरि की पहाड़ी पर वाहन देवता या अग्निदेवता का आह्वान किया था। ज्वालामालिनी और हेलाचार्य द्वारा संस्थापित जैन परम्परा की यह मौलिक घटना है। हेमग्राम के हेलाचार्य की मूर्ति और पहाड़ी पर पोन्नुर (पोनदेवता) के विद्यमान पुरातत्व संबंधी साक्ष्यों के आधार पर उनके नाम से संबंधित ऐतिहासिक घटनाओं की पुष्टि हम

कर सकते हैं। जैन धर्म के दिगंबर पंथ के अनुसार ज्वालामालिनी आठवे तीर्थंकर चन्द्रप्रभा की यक्षिणी हैं। जैन पंथियों की एक दूसरी मूर्ति भी इसी नाम की यहाँ पर है जिसे विद्यादेवी माना गया है।

दक्षिण आरकोट : दक्षिण आरकोट जिले में पाटलिपुर जैन गुरुओं का मुख्य केन्द्र था। यहाँ द्रविण संघ का अड्डा था। इनके रहने का समय ई० पू० १०० वर्ष माना जाता है। पैरियापुनम के अनुसार ७वीं ई० में यहाँ जैन मठाधीशों की एक बड़ी जमात थी। इस तथ्य की पुष्टि विल्लुपुरम, तिरुनरुगमदइ और सिंगावरम् में पाई गई प्राचीन ऐतिहासिक प्रस्तर लिपियों से की जाती है।

दक्षिणी आरकोट जिले के तिरुक्कोविल तहसील में स्थित चोलवंदिपुरम जैन धर्म का एक अन्य प्रसिद्ध केन्द्र था। इस गाँव के समीप स्थित अंदिमलय पहाड़ी पर उपलब्ध ऐतिहासिक साक्ष्यों से इसकी पुष्टि की जा सकती है। एक पहाड़ी टीले पर पत्थर में उत्कीर्ण पाँच या छह मूर्तियाँ हैं। ये पत्थरों से आच्छादित हैं, जिस पर महावीर की ध्यानमुद्रा में मूर्ति है।

दक्षिण आरकोट के गिंजी तालुक का इलाका पुराने समय से ही जैनों का गढ़ था जो कि आज तक है। तमिल प्रदेश के जैन वर्तमान में मुख्यतः उत्तर आरकोट, दक्षिण आरकोट और चिंगलपुर जिलों में केन्द्रित है। उनके प्रमुख गुरु का मुख्यालय गिंजी तालुक के चित्रपुर में स्थित है। यह मठ श्रवण बेलगोला के प्रमुख मठ के अंतर्गत आता है। चित्रपुर में दो जैन मंदिर हैं—मल्लिनाथ मंदिर और पार्श्वनाथ मंदिर। इनमें से मल्लिनाथ मंदिर निश्चित ही पुराना और मूल जैन मंदिर है।

पुड्डुकोट्टइ : कई इलाकों को छोड़ते हुए यद्यपि वहाँ भी जैन धर्मावलंबी हैं, हम चलते हैं प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपूर सित्तानवासल और नर्तमलई, जो पुड्डुकोट्टई राज्य के अन्तर्गत आते हैं। इसी स्थान से जैन धर्म लगभग पन्द्रह सौ वर्षों तक तीसरी सदी ई० पू० से बारहवीं सदी तक फला-फूला।

सित्तानवासल नाम दिया गया है एक लंबी पहाड़ी श्रृंखला को जिसका शाब्दिक अर्थ है-सिद्धों अथवा जैन-साधुओं का निवास-स्थल। सिद्ध का तमिल उच्चारण सित्ता होता है और वासल का अर्थ है निवास स्थल। यहाँ ऐसी प्राकृतिक गुफा मिली है जिसमें पत्थरों में तराशे हुए सत्रह बिस्तर और तकिए हैं। सित्तानवासल के अलावा ऐसी प्राकृतिक गुफाएँ तेनिमलई,

नर्त्तमलई और अलुरुत्तिमलई की पहाड़ियों में भी मिली हैं। इस क्षेत्र का अगला महत्वपूर्ण स्थल अखिर-कोविल अथवा अरहंतों का मंदिर है। यह पत्थरों में तराशा हुआ गुफा-मंदिर है। ऐसा मानना है कि पल्लव राजा महेन्द्रवर्मन-प्रथम ने इसकी खोज की थी। इस मंदिर के चारों ओर सुंदर चित्रकारी की गई होगी, मगर अब उसमें से कुछ ही चित्र शेष रह गए हैं। इन चित्रों को भीतरी छतों एवं बीमों और खंभों आदि पर देखा जा सकता है। चित्रकारी की मौलिकता निःसंदेह जैन धर्म से संबंधित है। इनका कलात्मक सौंदर्य जैन धर्म के विभिन्न विधाओं को परिपुष्ट करता है।

सित्तानवासल की कलाकृति भारतीय एवं सीलोन (श्रीलंका) की कलात्मक शैली के बीच समन्वयात्मक कड़ी का उदाहरण है। इसका अध्ययन अजंता की गुफा और बाग गुफा, जो क्रमशः दक्षिण भारत और उत्तर भारत में हैं, के साथ-साथ श्रीलंका की सिगिरिया गुफा के भित्ति चित्रों के साथ भी करना चाहिए। ये सारी कलाकृतियाँ चौथी एवं ७वीं शताब्दी के बीच की हैं। सित्तानवासल की कलाकृतियाँ दक्षिण भारत की प्राचीन कला को दर्शाती हैं। ये जैन धर्म के दृष्टिकोण को दर्शानेवाले एकमात्र उदाहरण हैं।

नरटामलई छोटी पहाड़ियों की एक निचली श्रृंखला का नाम है जिसकी संख्या लगभग ९ है। इन पहाड़ियों में जैन भग्नावशेषों की भरमार है। वे ये बताते हैं कि यहाँ प्राचीन काल से मध्यकाल तक जैन साधु वास करते रहे होंगे।

अलुरुत्तिमलई के पहाड़ों पर सित्तानवासल की तरह ही प्राकृतिक कंदराएँ मिली हैं। यहाँ पत्थर पर तराशे तीर्थंकरों के चित्र भी उपलब्ध हुए हैं।

इसके समकालीन एक और मठ का पास की पहाड़ी बोम्मामलई पर अवस्थित होने का पता चला है। उपलब्ध शिलालेख के अनुसार ग्रामवासी द्वारा जैन देवताओं को भोग लगाया जाता है तथा साधुओं के निवास और भोजन की व्यवस्था के लिए त्रुपल्लितमई तथा तैंतिस्पल्लिमलई के मठों की व्यवस्था की जाती है। नरटामलई की ही एक और पहाड़ी का नाम है मेला मलई अर्थात् पश्चिमी पहाड़ी। इसका एक और नाम है समनार मलई जिसका अर्थ जैन साधुओं का पहाड़ी पर निवास स्थल से है। वास्तव में यह

मूलतः जैन-स्थल रहा होगा। इस बात की पुष्टि की गई है कि तेरहवीं सदी के प्रारम्भ में इसे एक विष्णु मंदिर के रूप में परिवर्तित कर दिया गया।

तेनिमलई पुड्डकोट्टई इलाके की एक और पहाड़ी है जो अपने जैन अवशेषों के कारण प्रसिद्ध हैं। यहाँ एक प्राकृतिक गुफा है जो इस बात को दर्शाती है कि पुराने समय में भी यहाँ लोग वास करते थे।

उसी अंचल में चेट्टिपट्टी एक और मनोरम स्थल है, जिसे कई विशिष्ट जैन साधुओं के जन्मस्थान होने का गौरव प्राप्त है। यहाँ भी जैन धर्म से संबंधित कई प्राचीन ऐतिहासिक चित्र मिले हैं। समनार कुंदु (जैन साधुओं का टीला) नामक एक टीले पर १९३६ ई० से ही खुदाई जारी है। इस खुदाई से दो मंदिरों का पता चला है। ये चारों तरफ दीवारों से घिरे हैं। इसके अंदर कई छोटे-छोटे मठ हैं। उनकी सीढ़ियों की संरचनाशैली तत्कालीन सीलोन के मठों की संरचना शैली से मिलती-जुलती है।

मदुरा क्षेत्र— अब हम मदुरा क्षेत्र की ओर आते हैं जो वर्तमान मदुरई जिले का ही अंचल है। यह क्षेत्र अन्य बातों के अलावा तीन प्रकार की प्राचीन वस्तुओं के लिए विशेषरूप से ख्यात है। ये इस प्रकार है- (१) प्राचीन गुफाएं एवं पहाड़ियाँ जिनमें ब्राह्मी लिपि के अभिलेख एवं तराशी हुई मूर्तियाँ हैं (२) जैन देवों / देवियों एवं उपदेशकों की पत्थर पर तराशी गई मूर्तियाँ हैं। (३) तमिल भाषा एवं वत्तेलुतु अक्षरों में लिखित प्राचीन अभिलेख हैं।

क्रमश :

राजर्षि प्रसन्नचन्द्र

नरेन्द्र सिंह जैन

राजर्षि प्रसन्नचन्द्र — पोतनपुर नामका एक नगर था, उसमें सोमचन्द्र नामके राजा राज्य करते थे। राजा सोमचन्द्रका स्वभाव अपने नामके अनुसार चन्द्रमा के समान सौम्य था। उनकी रानीका नाम धारिणी था; जो शीलको ही अपना अलंकार समझती थी। वह विवेकरूपी जल की बावड़ी के समान थी। साथ ही सतीधर्म का पालन करने में सदैव तत्पर रहती थी। रानी होते हुए भी वह पति सेवा स्वयं ही करती थी।

एकबार राजा सोमचन्द्र गवाक्षमें बैठे हुए थे और धारिणी अपने कर-कमलों से उनके सिर में कंघी कर रही थी। अचानक धारिणीने कहा :—
स्वामिन् ! दूत आया है !

राजा लोग दूतका नाम सुनते ही चौंक पड़ते हैं। क्योंकि वे दूतको अपने लिए किसी आनेवाले संकटका सन्देश-वाहक ही समझते हैं। अर्थात् उनकी धारणा के अनुसार दूत आने का आशय संकट का आना ही हो सकता है। अतः सोमचन्द्र भी दूतका नाम सुनते ही चौंके और इधर-उधर देखने लगे। किंतु चारों ओर दृष्टि दौड़ाने पर भी उन्होंने किसी को वहाँ आये या आकर खड़े होते नहीं देखा। इस लिये धारिणी से पूछा–कहाँ है वह दूत? मुझे तो दिखाई नहीं देता।

यह सुन अब तक बड़े प्रयत्न से रोके हुए हास्य को रानी ने प्रवहित कर हँसते-हँसते कहा,—नाथ! किसी अन्य भूपतिका नहीं ; वरन् स्वयं धर्मराजा का ही वह दूत है। यह रहा वह दूत लीजिये!

यों कहते हुए धारिणी ने सोमचन्द्र के मस्तक परसे एक सफेद बाल खींच कर उनके हाथ पर रख दिया।

वृद्धावस्था के यौवन–घातक शस्त्र के समान उस केशराज को देखते ही सोमचन्द्र का मुख विषाद से मलिन हो गया। मानों चन्द्रको राहु ने ग्रस लिया हो।

यह देखकर पतिपरायणा धारिणी भी कुछ खिन्न सी हो गई। किन्तु उसे तो अपने स्वामी का विषाद दूर करना था। अतः विनोद-पूर्वक बोली :-

देव! क्या आपको वृद्धावस्था से लज्जा प्रतीत होती है, जो कि केवल एक सफेद बाल देखते ही शोक-सागर में डूब गये? यदि आपको वृद्धावस्था से लज्जा लगती हो तो मैं ढोल बजवाकर ढिंढ़ोरा पिटवा देती हूँ कि "कोई भी सोमचन्द्र राजा के वृद्ध होने की बात तक अपने मुँह से न निकाले!"

अब तो राजा सोमचन्द्र भी मौन न रह सके। उन्होंने गंभीरतापूर्वक कहा,– मैं सफेद बाल देखकर वृद्धावस्था के आजाने की चिंतासे दुखित नहीं हूँ। मेरे दुःख कारण दूसरा ही है। देवि! दुःख तो मुझे इस बातका है कि– मेरे पूर्वजों ने सिर पर सफेद बाल आने के पहले ही संसार का त्याग किया है, किन्तु मैं तो सिरपर सफेद बाल आजाने पर भी अभी तक विषयासक्त बना हुआ हूँ!

राजा के इस वेदनायुक्त कथनने धारिणी को गंभीर बना दिया। उसने कहा,—प्राणेश! आपकी चिन्ता उचित ही है; किन्तु केवल चिन्तासे कार्य-सिद्धि थोड़े ही साधी जा सकती है?

ठीक है, देवी! तेरा कथन सर्वथा सत्य है! चिंता करते रहने की अपेक्षा "जगे तभी से सवेरा" यों मानकर कार्य में प्रवृत्त हो जाना कल्याणकारी हो सकता है। मैं तो आज ही व्रत ले सकता हूँ; किन्तु इस दुधमुँहे राजकुमार को गद्दी पर कैसे बिठाया जाय?

एकदम नीरवता व्याप्त हो गई। राजा और रानी विचार में डूब गये। किन्तु सोमचन्द्र ने थोड़े ही क्षण में निर्णय लिया और बोले :—

धारिणी! व्रत के अभिलाषी के लिए राज्य या पुत्र की चिन्ता करना उचित नहीं। जब कि मुझे संसार का त्याग ही करना है; तो फिर राज्य या पुत्र की चिंता में पड़ जाना कभी योग्य नहीं कहा जा सकता। तू बुद्धिमती है, मैं व्रत ग्रहण करता हूँ और तू अपने पुत्र का पालन कर।

यह सुनते ही धारिणी ने सहसा स्वामीका हाथ पकड़ लिया। उसके कहा–स्वामिन्! आप अकेले नहीं जा सकते। जहाँ काया वहीं छाया अथवा जहाँ पति वहीं सती भी साथ ही रहेगी। आपके बिना मैं यहाँ क्षण भर भी

रहने में असमर्थ हूँ। साथही आपके कल्याण मार्ग में विघ्न डालना भी मेरा धर्म नहीं है। सती नारी के लिए तो सुखद या दुःखद दोनों ही अवस्था में पतिका अनुसरण करना मुख्य धर्म है। अतः बालक राजकुमार को आप अपने हाथों से ही सिंहासनपर बिठाइये और मुझे अपने साथ चलने की आज्ञा दीजिये। जिससे कि वनमें भी आपकी सेवा करते हुए मैं अपना जीवन सफल कर सकूँ।

किन्तु इस प्रसन्नचन्द्र बालक को सम्हालेगा कौन ?

देव ! यह चिन्ता निरर्थक है। अरण्य में उत्पन्न हुए तरुवरों को कौन रक्षा करता है? कौन उन्हें पाल-पोसकर बड़ा करता है या उनकी रखवाली करने कौन जाता है?

कोई भी नहीं।

तो फिर वही बात यहाँ भी समझ लीजिये! प्रसन्नचन्द्र बालक अवश्य है; किन्तु उसका भाग्य भी तो उसके साथ है? अपने ही कर्मों से वह बड़ा होने वाला है। अतः यह कल्पना ही निरर्थक है कि हमारे पालने-पोषने पर ही बच्चे बड़े हो सकेंगे, अन्यथा नहीं। हम तो निमित्त मात्र हैं। भाग्य की बात प्रधान है। कोई भी माता-पिता यह नहीं चाहते कि उनकी सन्तान मर जाय। किन्तु फिर भी कई माता-पिताकी सन्तानों को हम प्रत्यक्ष मरते देखते हैं। इसी प्रकार कई बालकों के माता पिता भी उनको अनाथ दशामें छोड़कर मर जाते हैं। फिर भी वे बड़े हो ही जाते हैं; यह भी यह हमसे छिपी हुई बात नहीं है। अतएव केवल सन्तान के पालन पोषण के लिए धर्मसे चूकना उचित नहीं हो सकता। साथ ही प्रसन्न चन्द्र को पालकर बड़ा करनेवाले हमारे सिवाय भी अनेक व्यक्ति हैं। मैं तो समझती हूँ कि अपने भाग्य के कारण ही उसने राजपुत्र के रूप में जन्म लिया है और उसी भाग्य के बल पर वह बड़ा होगा। उसमें मेरा या आपका कोई वश नहीं चल सकता; अतएव आप इस विचार को ही त्याग दीजिए और इस दासी को साथ चलने की अनुमति दीजिए।

अच्छी बात है, तुमभी साथ चलो!

सोमचन्द्र ने तत्काल ही प्रसन्नचन्द्र के राज्यारोहणका कार्य पूरा कर, वृद्ध अमात्यों मंत्रियों तथा अन्य राजहितैषियों को बालराज और प्रजाको

रक्षा का भार सौंप दिया और एक दासी के साथ रानी धारिणी को साथ लेकर वनके लिये प्रस्थान किया।

"दिक्प्रोषित" तापस बने हुए वे वनमें आकर एक शून्य आश्रम में रहने लगे। और सूखे पत्ते आदि चबाकर कठिन तप में संलग्न हो गये। उन्होंने पलाशपत्र एकत्र कर एक आश्रम स्थान भी बना लिया, जहाँ आकर हरिण और थके माँदे मुसाफिर विश्राम करते रहते।

सती धारिणी वहाँ भी पति सेवा में ही तत्पर रहती । वह अपने स्वामी सोमचन्द्र के लिए कोमल तृणों की शय्या बनाती और सोमचन्द्र वनमें से जो फल लाकर देते उन्हें ठीक से बनाकर प्रेम-पूर्वक खिलाती। साथ ही पके हुए फलों को पीसकर उनके रससे रात में दीपक जलाती और पति के हाथ पैर दबाकर उनकी थकावट दूर करती । पति के सुख के लिये उसने आश्रम के आँगन को लीपने के साथ उसे सदैव स्वच्छ रखने का नियम बना लिया था। उधर धारिणी के प्रेम तन्तु से बद्ध राजा सोमचन्द्र भी स्वादिष्ट जल और उत्तमोत्तम फल लाने में होने वाले श्रम की पर्वाह नहीं करते थे। शेष समय में दोनों पति पत्नी मृग-शावकों का लालन-पालन कर सुख-पूर्वक दिवस व्यतीत करते थे।

किन्तु धारिणी जब पति के साथ वन में आई; तब वह सगर्भा थी। अतः वन में रहते हुए उसका गर्भ क्रमशः बढ़ने लगा। यद्यपि गर्भ की वृद्धि से कितनी ही बार स्त्रियों को भयंकर वेदना सहनी पड़ती है। किन्तु इन गर्भ में आया हुआ जीव पुण्यात्मा था; अतएव धारिणी को किसी प्रकार की पीड़ा पहुंचाये बिनाही वह बढ़ता चला गया।

निश्चित समयपर धारिणी ने एक पुत्र को जन्म दिया। उस बालक में एक भी सुलक्षण की कमी नहीं थी। उसकी ऐसी अद्‌भुत कान्ति थी; मानों बिना तेल पुरे ही दीपक जल रहा हो।

वह था तो राजपुत्र ही; किन्तु वनमें उसके लिये वस्त्र कहां से आते। अतः सोमचन्द्र उसे उढ़ाने के लिये वल्कल एवं छाल आदि ले आये। इस प्रकार अपने पुत्र को वल्कलसे आच्छादित रहनेवाला होनेके कारण उसका नाम भी वल्कलचीरी रख दिया।

वल्कलचीरीकी भवितव्यता भी विचित्र ही थी। प्रसूति के पश्चात् राजमहल में निवास करनेवाली कोमलांगी रानी को जो सुखसाधन और सामग्री मिल सकती है, वह यहाँ कैसे प्राप्त होती! अतएव धारिणी बीमार होकर चल बसी। अब सोमचन्द्र ने साथ में आई हुई दासी को उस बालक के पालन-पोषण का भार सौंपा, किन्तु थोड़े ही दिनों में वह दासी भी धारिणी के पथ पर चल दी; यानी उसकी मृत्यु हो गयी।

वल्कलचीरी के आँखे खोलकर किसी को भलीभाँति देख सकने के पहले ही माता और धायमाता दोनों से बिछुड़जाने के कारण उसके लालन-पालन का भार सोमचन्द्रपर ही आ पड़ा था; अतएव उसने वन में भटकती हुई भैंसों का दूध दुहकर बालक को पिलाना आरंभ कर दिया। साथही दिनरात उसे अपनी गोद में लिये हुए परिपालन करने लगा।

धीरे-धीरे वल्कलचीरी पैरों पर चलना सीख कर मृगशावकों के साथ धूल में खेलते हुए सोमचन्द्र को आनन्दित करने लगा। सोमचन्द्र भी इधर-उधर से ईंधन एवं तृण धान्यादि लाकर भोजन तैयार करते और वल्कलचीरी को खिला-पिलाकर अपनी क्षुधा भी शांत करते। इस प्रकार आगे चल कर तो वनफल और वन-धान्यादि सेवन कर वल्कलचीरी दुस्तपकी साधना में अपने पिता सोमचन्द्र की भाँति पूरा तपस्वी बन गया।

युवावस्था की ओर बढ़ता हुआ वल्कलचीरी सभी कार्य करने में समर्थ और पितृ चर्या में प्रवीण हो गया। अब वह स्वयं फल लेने जाता और पिता सोमचन्द्र की सब प्रकार से सेवा भी करता था।

दूसरा परिच्छेद

इधर प्रसन्नचन्द्र भी बड़ा हो गया था। युवावस्था में प्रवेश करने के बाद उसने राज-शासन की बागडोर अपने हाथों में लेली थी। इसके बाद एक सुलक्षणा राज कन्या के साथ विवाह कर विषय विलास का सुखोपभोग कर रहा था।

प्रसन्नचन्द्र ने एक बार सुना कि — मेरा छोटा भाई पिता के साथ वन में निवास करता है। अतएव इस समाचार ने उसे अपने भाई को देखने की उत्सुकता जागृत कर दी। वह सोचने लगा,—मेरा भाई कैसा होगा और

उससे मेरी भेंट किस प्रकार हो सकेगी? दिन रात इसी चिंतन के फलस्वरूप भाई से मिलने की उत्कण्ठा यहाँ तक बढ़ गई कि प्रसन्नचन्द्र राजकाज और विषय-विलास से विरक्त हो गया।

दीर्घकाल तक चिन्ता करने के पश्चात् प्रसन्नचन्द्र ने अपने भाई का चित्र बनवाकर मँगवाने का निर्णय किया, और कुशल चित्रकारों को बुलाकर आज्ञा दी कि—तुमलोग जहाँ पिताजी रहते हैं, उस वन में जाकर उन की सेवा में लगे हुए मेरे भाईका चित्र तैयार करके शीघ्र ले आओ!

राजा की आज्ञा के अनुसार चित्रकार वन में गये और वल्कलचीरी का यथावत् चित्र बनाकर वापस लौटे। वे लोग बड़े ही कुशल थे और साथ ही राजा की आज्ञा भी थी, इधर राजा के भाई का ही चित्र तैयार करना था, अतएव चित्र वल्कलचीरी के आदर्श प्रतिबिम्ब के समान ही तैयार किया गया था। वह इतना आकर्षण और मनोहर था कि यदि उसमें चैतन्य का संचार किया जा सकता तो वह दूसरा ही वल्कलचीरी बन जाता।

चित्र को देखकर प्रसन्न हो राजा ने विचार किया कि—मेरा भाई भी रूप में मेरे पिता के समान ही है।

फिर तो वह उस चित्र से इस तरह लिपट गया कि मानो खुद भाई से ही उसकी भेंट हुई हो। वह चित्र में बने हुए भाई का सिर सूँघने लगा। साथही स्नेहमय चुम्बन करते हुए उसने कहा—भाई! बड़े भाग्य से ही मुझे तेरे दर्शन हुए है।

यह भाई नहीं वरन् उसकी चित्रित आकृति मात्र होते हुए भी इसमें कितना आकर्षण है? किसी भी चित्र में यथोचित भावों का आरोपण किया जाय तो, वह उस प्रकार के भावों की वृद्धि किये बिना नहीं रह सकता ।

वल्कलचीरी के उस चित्र को गोद में लेकर बारम्बार देखने पर भी राजा प्रसन्नचन्द्र को संतोष नहीं होता था। जैसे जैसे वह अधिक मनोयोग से देखता, वैसे ही वैसे भाई के प्रति उसका आकर्षण बढ़ता जाता। किन्तु जब उसने अपने भाई को वल्कल से आच्छादित देखा, तो उसके चित्त को आघात सा लगा और उसके नेत्रों से आँसू टपकने लगे।

मेरा भाई और वह वल्कल पहने हुए? मैं यहाँ राजसुख भोगूँ और वह वहाँ वनके कष्ट सहे? मेरा भाई जीवित-विद्यमान होते हुए मैं अकेला ही राजसुख कैसे भोग सकता हूँ? पिता वृद्ध हैं, अतएव वे यदि वनवास के कष्ट सहें तो यह बात जुदी है; किन्तु वह सुकुमार बालक तो अभी वनवास के योग्य नहीं है। इस तरह नाना प्रकार के विचार करता हुआ राजा प्रसन्नचन्द्र मन-ही-मन अत्यन्त दुःखानुभव करने लगा।

धीरे-धीरे राजा प्रसन्नचंद्र ऐसी दशा में पहुंच गया कि यदि वल्कलचीरी से शीघ्र भेट न हो सकी तो परिणाम न जाने क्या होगा? इसलिए राजा ने दिनरात इसी बात के लिए उपाय खोजना आरंभ कर दिया कि उस वन में जन्मे हुए जीवों के समान अपने भाई को भी नगर में कैसे लाया जाय?

अन्त में एक युक्ति समझ में आ ही गई। राजा ने पोतनपुर की चतुर वेश्याओं को बुलाकर आज्ञा दी कि तुम मुनिवेश धारणकर वन में जाओ और मेरे भाई वल्कलचीरी से मिलकर मीठी-मीठी बातों से उसके साथ मेल बढ़ाओ और यहाँ से विविध प्रकार की मिठाइयाँ लेजाकर उसे खिलाओ, जैसे भी हो उसे अपनी ओर आकर्षित कर अपने साथ यहाँ ले आओ।

फलतः राजा की आज्ञानुसार वेश्याएँ मुनि वेश में सोमचन्द्र ऋषि के आश्रम में जा पहुँची। और उन मुनिवेशधारिणी वेश्याओं को देखते ही वल्कलचीरी ने तत्काल उन्हें नमस्कार करके पूछा–हे महर्षियों! आप कौन? और आपका आश्रम कहाँ है?

वल्कलचीरी तो मन में यही समझता था कि —इस विश्व में मनुष्य के रूप में सभी ऋषि ही बसते है। संसार में स्त्री जाति का भी अस्तित्व हो सकता है; इस बात को वह जानता तक न था। और गृहस्थी के होने की भी उसे कल्पना नहीं थी। इसी प्रकार संसार में जितने भी मनुष्य हैं, वे आश्रम में ही बसते हैं और ऋषियों का ही जीवन व्यतीत करते हैं। क्योंकि उसके जन्म के पश्चात् शीघ्र ही माता धारिणी और धायमाता दोनों का देहान्त हो गया था। अतः आजतक उसने न तो किसी स्त्री का मुख ही देखा था और न यही ज्ञान हो सका था कि स्त्री नाम का कोई प्राणी संसार में अपना अस्तित्व रखता है। अतएव वल्कलचीरी से जब कभी कोई मिलता तो वह उसे ऋषि ही समझकर नमस्कार करता और महर्षि के नाम से सम्बोधन

करता। इसी कारण पोतनपुर से आई हुई वेश्याओं को भी उसने महर्षियों के रूप में मान लिया था। फिर उन वेश्याओं ने मुनिवेश भी तो धारण किया था, अतएव उसके लिए ऐसा मानना स्वाभाविक ही था।

हाँ, तो वल्कलचीरी के नमस्कार पूर्वक पूछे हुए प्रश्न का उत्तर देते हुए वेश्याओं ने भी नमस्कार करके कहा कि,—हम पोतन नामके आश्रम-निवासी ऋषि हैं। आज हम तुम्हारे अतिथि बनकर यहाँ आये है! बताओ तुम हमारा क्या आतिथ्य करोगे? वल्कलचीरी ने कहा,—महर्षियों! आप यहाँ विराजिये। अभी मैं वनमें से बिल्वादि मधुर पके ताजे फल लाया हूँ, उन्हें आप आहार-रूप में ग्रहण कीजिये। वेश्याओं ने वल्कलचीरी के हाथों से उन बिल्वादिको ग्रहण कर ध्यान से देखा और मुँह बिगाड़कर वापस लौटाते हुए कहा,—ऐसे बिल्कुल रसहीन (सूखे) फलों को कौन खाएगा। हमारे आश्रम में स्वाद-रहित फलों को कोई हाथ भी नहीं लगाता! यह सुन वल्कलचीरी आश्चर्ययुक्त नेत्रों से उन महर्षि रूप मानी हुई वेश्याओं की ओर देखने लगा। उसने सोचा कि,—इन महर्षियों के आश्रम में और न जाने कैसे रसीले एवं स्वादिष्ट फल पकते होंगे?

उन मुनिवेशधारिणी वेश्याओं ने कहा,—क्या विचार कर रहे हो? हमारे आश्रम के फलों का ही न ?

हाँ——

लो, हमारे आश्रम के वृक्षों पर पके हुए फल ये हैं!——यों कहकर उन्होंने अपने साथ लाये हुए मीठे फल उसे बतलाये।

तो क्या आपलोग अपने आश्रम के फलों को यहाँ साथ में ले आये हैं?

हाँ, क्योंकि हमें यहाँ वैसे फल नहीं मिल सकनेका भरोसा था। तुम्हें भी हम ये अत्यन्त मीठे फल खिलायेंगे। क्यों खाओगे न ?

जैसी महर्षियों की आज्ञा!

इसके बाद वे वेश्याएँ एक वृक्ष के नीचे बैठ गई और वल्कलचीरी को भी उन्होंने अपने अत्यन्त निकट बैठाकर फल और मिठाई खिलाना आरंभ किया। उस बेचारे ने जीवन में पहलीही बार मिठाइयाँ खाई थी; इसलिए उसे उनमें बड़ा ही स्वाद आया। वह स्वाद यहाँ तक उसकी जिह्वा

को रुचा कि वनफलों के प्रति उसके मनमें अत्यन्त अरुचि उत्पन्न हो गई। वह सोचने लगा कि,—इन महर्षियों की ही तरह यदि मुझे भी पोतनाश्रम में ही रहने को मिल सके तो कितना अच्छा हो? प्रतिदिन ऐसे मधुर फल वहां सहज ही खाने को मिल सकेंगे।

वल्कलचीरी इस प्रकार मन में सोचता हुआ जब मिठाई खा रहा था, तब उसके मन में यह विचार उठा कि इनका शरीर इतना कोमल कैसे है पूछने पर वेश्याओं ने कहा कि हमारे वन के मीठे फलों को खानेवाले का शरीर इतना कोमल हो जाता है,

इसपर वल्कलचीरी ने कहा,—यह तो बहुत ही आश्चर्यकारक बात कही जा सकती है। क्योंकि यहाँ ऐसा कुछ भी नहीं है। इस पर वेश्याओं ने भी स्वीकृति-सूचक गर्दन हिलादी।

तो फिर तुम भी इस आश्रम और यहाँ के नीरस फलों को त्याग क्यों नहीं देते? हमारे आश्रम में यदि चलोगे तो तुम भी हमारे समान बन जाओगे!

अतः मिठाई के स्वाद से लुब्ध बन जानेवाले वल्कलचीरी ने जब हाँ भरदी, तो वेश्याओं ने कहा,—यदि तुम्हारे पिताको इस बात का पता लग गया तो वे कभी तुम्हें वहाँ नहीं आने देंगे, इस लिए हम यहाँ से जाकर अमुक स्थान पर तुम्हारी राह देखेंगे। वहाँ तुम शीघ्र ही आ जाना ।

ठीक है, आपलोग जाइये! मैं अभी वहाँ आ पहुंचता हूँ।

वेश्याओं ने पहिलेही से एक स्थान निश्चित कर रक्खा था। अतएव वहाँ पहुँचकर वे वल्कलचीरी की प्रतीक्षा करने लगीं।

थोड़ी ही देर के बाद उन्होंने वल्कलचीरी को वहाँ आते हुए देखा, किंतु दैववशात् उसी समय और उसी स्थान की ओर सोमचन्द्र को आते हुए चर-पुरुषों (राजसेवकों) ने देख लिया और उन्होंने तुरंत ही वेश्याओं को सावधान करते हुए कहा कि—सोमचन्द्र ऋषि इधर ही आ रहे हैं।

वेश्याएँ चाहे जितनी चतुर चालाक क्यों न हो, किन्तु वे स्त्रियाँ ही ठहरीं! स्त्रियों में कायरता होना स्वाभाविक है। उन्हें शंका हुई कि,—सोमचन्द्र ऋषि हमारे यहाँ आने और वल्कलचीरिके साथ किये गये संकेत

का पता पाकर ही इधर आ रहे हैं। अतएव भयभीत होकर उन्होंने समझ लिया कि,–अवश्यही वे हमें शाप देंगे। और इसीलिये वे शिकारी को देखकर भागनेवाली हिरनी की तरह तुरंत इधर-उधर भाग गई।

इस प्रकार राजा का बताया हुआ निश्चित कार्य पूरा न कर सकने से वेश्याएँ पोतनपुर लौट आई, किन्तु राजा के सामने जाते हुए काँपने लगीं। फिरभी भयसे काँपते और रोते हुये उन्होंने राजा प्रसन्नचन्द्र के सम्मुख जाकर सब वृत्तान्त कह सुनाया। उन्होंने बतलाया कि सब प्रकार से वनचर जैसे बने हुए उस राजकुमार को हमने लुभाया और यहाँ लाने के लिए उसके साथ संकेत भी किया; तथा वह भी साथ आने के लिये तैयार हो गया। किन्तु दूरसे हमने पिताजी को आते देखा और भयभीत होकर उनके श्राप से बचने के लिए हम यहाँ भाग आईं।

प्रभो! हमारे इस अपराध को क्षमा कीजिये। किन्तु आप इतना तो विश्वास कर ही लीजिये कि हमने वल्कलचीरी को इतना लुभा लिया है कि अब वह हमारी खोज में ही एक से दूसरे वनमें भटकता फिरेगा; पर पिताजी के आश्रम में नहीं जायगा।

किन्तु इस प्रयत्न में प्रसन्न चन्द्र ने वेश्याओं का नहीं अपना ही अपराध माना और वह अपने आपको धिक्कारने लगा। उसने मनमें सोचा कि,–जड़बुद्धि के समान मैंने यह क्या कर डाला। पिता-पुत्र का वियोग करा देने पर भी मुझे अपना छोटा भाई नहीं मिल सका। अब वह बेचारा पिताजी से बिछुड़कर जीवित कैसे रह सकेगा?

इस प्रकार विचारों में डूबा हुआ राजा प्रसन्नचन्द्र अत्यन्त दुःख पूर्वक अपना समय व्यतीत करने लगा। जिस प्रकार थोड़े-से जल में रहने वाली मछली तड़पने लगती है; उसी प्रकार राजा प्रसन्नचन्द्र भी रात को पलंगपर पड़ा हुआ चिंता के मारे तड़पता रहता था।

इधर वल्कलचीरी जिन्हें महर्षि माने हुए था, उनके इस प्रकार अचानक भाग जाने से विचार मूढ़ हो गया। किंतु थोड़ी ही देर में अपने पिता को उस ओर आते हुए देखकर वह एक वृक्ष की आड़ में छिप गया। किन्तु सोमचन्द्र ऋषि तो स्वाभाविक रूप से उस ओर आ रहे थे और उन्हें वेश्याओं के आने

तथा रस-लोलुप बने हुए अपने पुत्र का भी कोई पता नहीं था। किन्तु पापी पुरुष तो सदैव शंकित रहता ही है।

सोमचन्द्र ऋषि के चले जाने के पश्चात् वल्कलचीरी उन वेश्याओं को ढ़ूढ़ता हुआ सारे ही वन में भटकता रहा। रस-लोलुपताने उसमें विकट पागलपन पैदा कर दिया था। अतएव उसे सारा वन छान डालने पर भी किसी श्रम या थकानका अनुभव नहीं हुआ। और न इस बात की ही चिंता हुई कि मेरे परम उपकारी पिताका क्या होगा? उसे तो पोतनाश्रम की धुन लगी हुई थी; इसलिये जैसे भी हो वह वेश्याओं के कहे हुए पोतनाश्रम में पहुँचना चाहता था।

अन्त में वह उन पोतनाश्रम के महर्षियों की खोज में सारा वन छान डालने पर भी जब कोई पता न पा सका; तो यह सोचते हुए एक स्थानपर बैठ गया कि,-वे महर्षि एकदम कहाँ चले गये होंगे? और उनका पोतना श्रम कहाँ होगा?

क्रमश :

श्रीचन्द्रराजचरित्र

प्राचीन काल के भारतवर्ष में कुशस्थलपुर नाम का एक बड़ाभारी सुन्दर नगर था। उसमें एक लाख गाँवों पर शासन करने वाले न्यायी प्रतापी यशस्वी श्री प्रताप सिंह नाम के महाराजा राज्य करते थे। उनके अंतःपुर में रूप-सौन्दर्य-शीलादि सद्‌गुणों से अप्सराओं को जीतने वाली पांच सौ दिव्य राणियाँ थी उनमें मुखिया पट्टराणी जयश्री नाम की थीं। उनके जय, विजय, पराजय, और जयंत नाम के चार राजकुमार थे। एक करोड सुभट, दश लाख घोड़े, दश हजार हाथी और उतने ही रथों से सम्पन्न उनका सैन्य बल था। मंत्री, महामंत्री, सामंत आदि प्रशस्त साधनों से श्रीमान प्रतापसिंह सुचारु ढंग से राज्य का पालन करते थे।

एक दिन महाराजा अपनी सुविशाल राज सभा में विराजमान थे। उस समय प्रतिहारी द्वारा आज्ञा-प्राप्त एक सार्थवाह ने उस सभा में बड़े अदब के साथ प्रवेश किया। शिष्टाचार के बाद महाराजा ने उससे परिचय पूछा तब उसने कहा कि देव? मैं दीपशिखा का रहने वाला हूं। मेरा नाम वरदत्त है। व्यापार के निमित्त मेरा यहां आना हुआ है। आज आपके दर्शन पा मैं कृतार्थ हुआ हूँ।

महाराज प्रतापसिंह ने आगंतुक व्यापारी का स्वागत करते हुए पूछा कि क्या आप अपनी उस दीपशिखा नगरी का परिचय भी देंगे? सार्थवाह वरदत्त ने बड़ी प्रसन्नता से कहा क्यों नहीं। देव? ऐसे तो भारतवर्ष में कई नगर हैं परन्तु दीपशिखा का ठाठ अपूर्व है। देवाधिक सौन्दर्य को धारण करने वाले स्त्री-पुरुषों से वह इन्द्रपुरी को भी मात देती है। भगवान के मंदिरों से कोट और बुर्जों से एवं राज महलों से शोभायमान इस नगरी के समान दूसरी कोई नगरी शायद ही कहीं होगी? जिसके बीच में चार दरवाजों वाला, कनक कलशों से मंडित श्री आदिनाथ भगवान का एक बड़ा ही रमणीय विशाल जैन मंदिर है। जो उसे तीर्थ स्थान का महत्व प्रदान करता है। चारों दरवाजों से प्रारम्भ होकर चारों दिशाओं में दुकानों की श्रेणियों से विराजित चार बड़ी सड़के जगह जगह चौराहों से मेल खाती हैं।

दीपशिखा के ईशान कोण में राज-वर्गियों के, अग्नि कोण में व्यापारियों के, वायु कोण में क्षत्रियों के और नैऋत्य कोण में सब प्रजाजनों के निवास-स्थान बने हुए हैं। उसके बाहर पत्थरों से बंधा हुआ कमलों से राज हंसो से विराजित एक बहुत बड़ा पद्म सरोवर नाम का तालाब बना हुआ है। जगह-जगह मधुर स्वादिष्ट जल से पूर्ण बावड़ियां कुएँ, प्याउ एवं फल फूलों से लदे पड़े पेड़ पौधों वाले हरे भरे उद्यान नगर की शोभा को चौगुनी बढ़ा रहे हैं।

हे महाराज! दीपशिखा की तारीफ मुंह से नहीं की जा सकती। देखने से ही पता चलता है कि कैसी है वह? अच्छा होता यदि आप वहां पधार कर उसे देखते। मैं मानता हूं आपके आतित्थ्य-सत्कार को करने में दीपशिखा के निवासियों को भी बड़ा आनन्द प्राप्त होगा। आप एक बार जरूर वहां पधारें।

इस प्रकार व्यापारी वरदत्त द्वारा दीपशिखा की विशिष्ट तारीफ को सुन कर एवं उसके भाव पूर्ण आमंत्रण का खयाल करके महाराजा प्रतापसिंह का चित्त वहां जाने के लिये उत्कंठित हो गया। कई दिनों के बाद उसी उत्कण्ठा से प्रेरित हो देश दर्शन के बहाने अपनी अंग रक्षक सेना को तैयार होने की आज्ञा दी। बात की बात में सारी सामग्री जुट गयी। भारी उत्सव के साथ अपने सामन्तों के व योग्य मंत्रियों के साथ दीपशिखा की दिशा में महाराज ने प्रस्थान कर दिया।

दिशाएँ शान्त हों। वायु अनुकूल बहती हो। आकाश निर्मल हो। पक्षी मधुर बोलते हों। ये सब भावी की शुभ सूचनायें हैं महाराजा प्रतापसिंह भावी की मंगल प्रेरणा से प्रेरित हुए, अपने लक्ष्य-दीपशिखा की तरफ अबाधगति से जा रहे थे। मार्ग में आये हुए सुरम्य वनस्थल ने फिर भी उन्हें कुछ समय के लिये अपनी मनोरम लीला दिखाने के लिये रोक ही लिया।

महाराज की आज्ञा से तंबू गाड दिये गये। विश्राम के लिये हाथी घोड़े खोल दिये गये। अपने अपने डेरों में सभी आराम करने लगे। बढ़िया खीनखाब के बने तंबू में जिसमें मखमली फर्श और इरानी कालीनें बिछी हुई थीं जो चारों ओर रेशम की रस्सियों से चांदी के खूंटों में बंधा हुआ था उसमें एक रत्नजटित सुवर्ण पलंग पर लेटे हुए महाराजा अपनी थकावट को दूर कर रहे थे। सुन्दर जरी की पोशाक पहने हाथों में सोने चांदी के दण्ड लिये द्वार-पाल मौन मुद्रा में खड़े थे। डेरे के चारों ओर हाथों में नंगी तलवारें लिये हुए सेना के चुने हुए सैनिक पहरा लगा रहे थे।

चारों ओर का वातावरण शान्त था। कभी कभी आम के पेड़ों पर बैठी हुई मदमाती कोयल की कूक और मकरंद के लोभी भँवरों की गूंज कुछ क्षण के लिये शान्ति को अवश्य भंग कर देती थी ऐसे प्रसंग में कोई चार कलावान् द्वारपाल के पास आकर बोले कि हम महाराज के दर्शन चाहते हैं। उनकी इस बात से प्रेरित हो द्वारपाल ने महाराजा को सूचित किया। महाराजा प्रतापसिंह गुणियों का समादर करने वाले थे, अतः उन्हें अपने पास लाने की आज्ञा दे दी। राजाज्ञा से वे चारों बड़े विनीत भाव से महाराजा के पास पहुँचे। स्वागत-शिष्टाचार के बाद महाराजा ने उनसे परिचय पूछा, तब उन कलाकारों ने अपनी ओज भरी वाणी से निवेदन किया, कि महाराज! हम श्री गुणन्धर कलाचार्य के शिष्य हैं। आपके श्री चरणों की सेवा में रहना चाहते हैं। हम में से एक पक्षियों की भाषा जानने वाला, दूसरा स्वामी के चित्त को पहचानने वाला, तीसरा स्त्री-पुरुषों के लक्षणों को समझने वाला और चौथा रथ को चलाने की कला में प्रवीण है।

महाराजा ने कलाकारों को बड़ी प्रसन्नता के साथ अपने पास रख लिया। ठीक है गुणों का आदर कहां नहीं होता? कहा भी है—

गुणः पूजा-स्थानं गुणिषु न च लिंगं न च वयः

अर्थात सर्वत्र गुणों की ही पूजा होती है। गुणियों में वय या चिन्ह नहीं देखा जाता।

थकावट से और भोजन आदि कार्यों से निवृत्त होकर महाराजा उस रमणीय वन-प्रदेश में स्वतंत्रता के साथ घूमते हुए प्राकृतिक सौंदर्य को निहारने लगे। निर्मल जल से लहराती हुई नदी के प्रवाहों में जल क्रीड़ा का अपूर्व आनंद लेने लगे। अनेक तरह के फल फूलों से लदे हुए पेड़ों की सघन छाया में बन-विनोद करते हुए महाराजा प्रतापसिंह अपने सामंतों मंत्रियों परिचारकों के साथ वापस अपने डेरे में लौट आये।

सूर्य अस्ताचल की ओट में छिपने लगा। आकाश लाल पीले बादलों से घिरता हुआ अन्धकार के मुंह में जाने लगा। तारे मार्ग दिखाने लगे। चंद्रदेव भी धीरे धीरे अपनी प्रियतमा चाँदनी के साथ अग्रसर हो अमृत वर्षाना शुरू किया। लोग भी आमोद-प्रमोद में प्रसन्नचित्त होते हुए, भावी मंगल की सूचनावाले स्वप्नों के सफल दर्शन के लिये निद्रा देवी की गोद में सो गये।

रात्रि बीतने लगी। पौ फटी। लाल साड़ी पहिने प्रकृति की लाडिली बेटी उषा-रानी हाथ में सोने का थाल लिये पूर्व की तरफ से आने लगी। संसार के समस्त प्राणी जगने लगे और अपनी अपनी भाषा में स्वागत करने लगे। मंगल बाजे बजने लगे। वैतालिक लोग स्तुति पाठ करने लगे। जय जय शब्दों से शिविर गूंज उठा। महाराजा ने भी अंगड़ाई लेते हुए उठ कर प्रातः कालीन आवश्यक कृत्यों से निवृत्त हो आगे प्रस्थान का आदेश दिया। बात की बात में सब तैयार हो गये और वहां से आगे को चल दिये।

महाराजा का सारा सार्थ मार्ग में आने वाली नदियों में, बड़े बड़े पद्म सरोवरों में, मुक्ता के समान निर्मल जल वाली बावड़ियों में अपनी रुचि के अनुसार क्रीड़ा करता हुआ, रमणीय वनों-उपवनों में कमनीय लता कुंजों उद्यानों में विहार करता हुआ आगे बढ़ रहा था। रास्ते में अनेक छोटे बड़े राजागण महाराज प्रतापसिंह के दर्शनार्थ आये, सभी ने अपनी अपनी योग्यता के अनुसार भेंट न्योछावर की। महाराज ने उस सब को स्वीकार करते उन लोगों का सम्मान सत्कार किया। अनेकों निर्धन याचकों को अनर्गल दान देते हुए अनेकों प्रकार के कौतुकों को देखते हुए वहां तक पहुंच गये जहां से दीपशिखा की दर्शनीय छटा दूर दूर से दिखाई देती थी।

महाराजा प्रतापसिंह का शिविर दीपशिखा से थोड़ी दूर पर लग गया। प्रकृति अपने माननीय अतिथि के स्वागत में पक्षियों के मंगल गान सुना रही थी, मंद मंद हवा के चँवर ढुला रही थी, सूर्य की सुनहरी किरणों से झिलमिलाते हुए वृक्ष की फैली हुई छाया छत्र का काम कर रही थी। पड़ोस में ही पद्म सरोवर निर्मल जल कमल से महाराजा का पूजोपचार कर रहा था। ऐसे सुखमय समय में भोजनादि कार्यों से निवृत्त होकर महाराजा प्रतापसिंह की आभ्यन्तर सभा जुड़ी हुई थी। अधिकारी लोग यथास्थान बैठे हुए थे। चारों कलाविज्ञ अपनी अपनी कलाओं के सम्बन्ध में चमत्कारपूर्ण घटनाओं को सुना रहे थे। इतने में किसी पक्षी के बोलने की आवाज सुनाई दी। पक्षियों के स्वर को जानने वाले कलाविद् ने उसी समय विनय के साथ निवेदन किया महाराज! आप को निकट भविष्य में भारी प्रिय लाभ होने वाला है। कलाविद् की बात को सुनकर महाराज प्रतापसिंह अत्यन्त प्रसन्न हुए।

इसी समय दीपशिखा के स्वामी राजा दीपचन्द्र देव अपने मुख्य सामन्तों और मन्त्रियों को साथ लेकर वहां स्वागत के लिये आ पहुँचे। महाराजा का अभिवादन करते हुए बड़े नम्र शब्दों में अभिनंदन किया और कहने लगे—

हे देव! आज आपके शुभागमन से हमारा देश पवित्र हो गया है। हमारी चिरसंचित अभिलाषायें आज पूर्ण हो गई हैं। आपकी उज्ज्जव कीर्ति कथा से हमारे कान तो पवित्र थे ही, पर आज आपके पुनीत दर्शनों से हमारी आंखें भी कृतार्थता का अनुभव करने लगी हैं। आप जैसे अतिथि का स्वागत करते हुए हम अपना अहोभाग्य समझते हैं। महाराज आइयें हम लोगों पर कृपा करके अपने पदार्पण से दीपशिखा को पवित्र बनाइयें।

राजा दीपचन्द्र देव की विनीत प्रार्थना को सुनकर महाराजा बहुत प्रसन्न हुए, और उन्होंने इष्टं वैद्योपदिष्टम के न्याय से उनका अतिथि होना स्वीकार कर लिया। राजा ने बड़ी सज धज के साथ महाराज को नगर में प्रवेश कराया। दर्शनार्थी प्रजा-जनों का समुद्र उमड़ पड़ा। सारे शहर में आनन्द की लहर दौड़ गई। सवारी देखने की लालसा से ललित ललनाओं ने राजमार्ग की सारी ऊँची नीची अट्टालिकाओं को, झरोखों को अलंकृत कर दिया। नाना प्रकार के मंगल बाजे बज रहे थे।

महाराजा प्रतापसिंह कलाविज्ञों के साथ लक्षण संपन्न सफेद घोड़ों से जुते हुए सुवर्ण-सुन्दर रथ में बैठे हुए, सजे हुए मकानों, और बाजारों की शोभा को निहारते हुए जा रहे थे। चारों ओर से जयध्वनि उठ रही थी। नागरिक कन्याएं केसरिये रंगे हुए अक्षत और सुगंधी फूलों को महाराज पर बरसा रही थीं। अकस्मात् महाराजा की दृष्टि राजमहल के झरोखे से टकरा गई। उसने वहां एक अत्यन्त रूपवती कमलमुखी कन्या को देखा। उनका मन वहीं उलझ गया। महाराजा क्षण भर के लिये समाधिस्थ योगी की तरह निस्संज्ञ हो गये।

इधर चित्त के भावों को जानने वाले कलावान् ने महाराज के मन की बात जानकर कहा कि महाराज! आपके अनुपम पुण्योदय से आपका चिंतित बहुत जल्दी सफल होगा। उस समय सावधान होते हुए महाराज ने कहा मालूम होता है मेरे हृदय को तुम जान चुके हो। बताओ यह किसका महल है? और यह सुमुखी कन्या कौन है? तब उस चितज्ञ चतुर ने कहा कि

महाराज यह आपके अनन्य भक्त राजा दीपचन्द्रदेव की महारानी प्रदीपावती का नवखंडी महल है। उन्हीं की कूख रूप सरोवर में कलहंसी के समान पैदा होनेवाली सर्वांगसुन्दर सूर्यवती नाम की यह उन्हीं की पुत्री है।

राजा दीपचन्द्रदेव, इस समय महाराज को कौन से अद्‌भुत समर्पणों से प्रसन्न करूं ऐसा सोच रहे हैं। इस कन्या के लिये भी वे चिंतित हैं कि कौन से कुलीन गुणी और श्रीसंपन्न वर के साथ पाणिग्रहण कराकर कर्तव्य पालन करूं। अतः इस काम में कोई देरदार नहीं है। दूध शक्कर के समान यह सुखद संबंध होने ही वाला है आप निश्चिंत रहें। कलावान की मन के अनुकूल बातों को सुनकर महाराजा बहुत प्रसन्न हुए। राज मार्गों में होते हुए वहां के तीर्थ रूप भगवान श्रीऋषभदेव स्वामी के दिव्य मंदिर के दर्शन किये। भाव भरे स्तोत्रों से भगवान की स्तुति कर महाराजा ने परमानंद पाया। इस प्रकार आगे बढ़ती हुई सवारी अपने पूर्व निर्धारित स्थान–राजा दीपचन्द्र देव के राजमहल में पहुँची।

राजमहल में अपने आदरणीय अतिथि के सत्कार में बड़ी सुन्दर सजावट की हुई थी। अद्‌भुत कला-कौशल से निर्माण किये हुए गलीचे बिछे हुए थे। उन पर मखमली गद्दे तकिये लगे हुए थे। पास ही सभा भवन में रत्न जटित स्वर्ण-सिंहासन महाराजा के लिये लगाया गया था। अधिकारियों के लिये भी योग्य आसन लगे हुए थे। सवारी से उतर कर महाराजा प्रतापसिंह राजा दीपचंद्रदेव के द्वारा सत्कारित सन्मानित होते हुए बड़े ठाठ के साथ सभा-भवन में रत्न सिंहासन पर आकर विराजमान हो गये। यद्यपि महाराज सिंहासन पर विराजमान थे पर उनका मन मधुकर उस भाग्यवती राज कन्या के मुख-कमल का ध्यान कर रहा था।

अवसर पाकर चित्तज्ञ कलावान् ने राजा दीपचंद्रदेव से कहा कि आज यह कितना सुन्दर समय है। महाराजा प्रतापसिंह के प्रताप से आज के सूर्य का आलोक संबंध कितना सुहावना प्रतीत होता है। चित्तज्ञ की इस बात में अपना मानसिक संकेत पाकर राजा दीपचन्द्र ने महाराज से प्रार्थना की कि हे महाराज! कुदरत की कला से प्रेरित हो आपके चरणों का संबंध इस देश के साथ इस नगरी के साथ और इसके निवासी हम लोगों के साथ हुआ है यह एक अभूतपूर्व घटना है। अब मैं अपनी राज कुमारी सूर्यवती जो मेरी एकमात्र लाडली बेटी है, उसका संबंध मैं चाहता हूँ आपसे हो जाय। सूर्य

और प्रताप के प्राकृतिक संबंध के जैसे यह संबंध संसार में प्रकाश देने वाला हो। मेरी इस भावना का श्रीमान भी आदर करेंगे।

राजा दीपचन्द्र की इस बात को सुन महाराजा ने बड़ी प्रसन्नता के साथ कहा कि–भला! प्राकृतिक संबंध की बात का कौन हितैषी आदर नहीं करेगा? आपके इस स्वाभाविक सद्भाव के लिये हम आपको धन्यवाद देते हैं।

महाराजा की स्वीकृति से दोनों ओर मंगल किये गये। बाजे बजने लगे। याचकों को दान दिया गया। ज्योतिषी लोगों से मुहूर्त निश्चित किया गया। विवाह की खूब जोरों से तैयारियां होने लगी। आखिर वह शुभ घड़ी भी आ पहुँची जिसमें महाराज का विवाह राजकुमारी सूर्यवती के साथ बड़े आनन्द समारोह के साथ संपन्न हो गया। प्रजाजनों और राजकर्मचारियों ने पूरा पूरा योग दिया। महाराजा ने सबको यथायोग्य दान-मान-सम्मान-सत्कार से संतुष्ठ किया। इस कार्य से जहां महाराज की इच्छा पूर्ण हुई वहाँ राजा दीपचन्द्र के सिर से एक बड़ा भारी बोझ भी हल्का हो गया।

सामुद्रिक–अंगविद्या को जानने वाले कलावान् ने रानी सूर्यवती के सुलक्षणों को देखकर महाराजा से प्रेरणा की कि ये अद्भुत स्वरूप वाली देवी पट्टरानी बनने योग्य हैं। इनके शुभ लक्षण स्वामी के स्वसुर के पिता के पितामहके नाना के एवं पुत्र पौत्रों के छत्रपतित्व को सूचित करते हैं। ये बड़ी योग्य होगी। इनकी कूख में चिंतामणी रत्न के समान दो पुत्रों की उत्पत्ति होगी। सामुद्रिक की इस बात को सुनकर एवं रानी सूर्यवती के प्रत्यक्ष अनुपम गुण गौरव को देखकर महाराजा ने उन्हें अपने अंत:पुर में पट्टराणी पद पर प्रतिष्ठित किया। लोको में यह बात अहो भाग्य! अहो रूप !! अहो सौभाग्य !!! पूर्व जन्म में बोये धर्म रूप कल्पवृक्ष के ये प्रारम्भिक फल हैं- इस प्रशंसा के रूप में खूब फैल गई।

क्रमशः

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Kolkata - 700 001
Ph: (O) 220-8105/2139,(Resi) 329-0629/0319

NAHAR
5/1, A.J.C. Bose Road, Kolkata - 700 020
Ph: (O) 247-6874, (Resi) 246-7707

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
Azimganj House
7, Camac Street, Kolkata - 700 017
Ph: 282-5234/0329

ARIHANT JEWELLERS
Mahendra Singh Nahata
57, Burtalla Street, Kolkata - 700 007
Ph: 238-7015, 232-4087/4978

CREATIVE LIMITED
12, Dargah Road, Post Box:16127,
Kolkata -700 017
Ph: (033) 240-3758/1690/3450/0514
Fax: (033) 240 0098, 2471833

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
13/4 Karaya Road, Kolkata - 700 019
Ph: (O) 2208967, (Resi) 2471750

MAHASINGH RAI MEGH RAJ BAHADUR
Goalpara, Assam

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Kolkata - 700 020, Ph: (Resi) 455-3586

M/S. METROPOLITAN BOOK COMPANY
93, Park Street, Kolkata - 700 016
Ph: 226-2418, (Resi) 475-2730, 476-8730

GAUTAM TRADING CORPORATION
32, Ezra Street, Kolkata - 700 001
6th Floor, Room No - 654
Ph: (O) 235 0623, (Resi) 239-6823

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road,
Kolkata - 700 007
Ph: 238-8677/1647,239-6097

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Kolkata - 700 001
Ph: (O) 348-8576/0669/1242
(Resi) 225-5514, 237-8208, 229-1783

APRAJITA
Air Conditioned Market
Kolkata - 700 071
Ph: (O) 282-4649, (Resi) 247-2670

ASHOK KUMAR RAIDANI
6, Temple Street, Kolkata
Ph: 237-4132/236-2072

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue, Kolkata, Ph: 464-1186,

SURANA MOTORS PVT. LTD.
84 Parijat, 8th Floor,
24A, Shakespeare Sarani
Kolkata - 700 071
Ph: 247-7450/5264

PANKAJ NAHATA
Oswal Manufacturers Pvt. Ltd.
Manufacturers & Suppliers of Garments &Hosiery Labels
4, Jagmohan Mallick Lane, Kolkata - 700 007
Ph: (O) 238-4755, (Resi) 238-0817

APARAJITA BOYED
Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106
Ph: 665-3666/2272
e-mail: Suravee@cal2.vsnl.net.in
sona@cal3.vsnl.net.in

B.W.M.INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi - 221401 (U.P.)
Ph: (O) 05414-25178, 25779, 25778
Fax: 05414-25378 (U.P.) 0151-202256 (Bikaner)

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani
Kolkata - 700 007
Ph: Gaddy- 233-1766/238-8846
Mobile: 9831028566
Resi : 355-9641/7196

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Kolkata-700 001
Ph: (B) 220-2074/8958 (D) 220-0983/3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2209755
Resi: 464-3235/1541, Fax: (033) 4640547

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Kolkata - 700 071
Ph: 282-8181

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
C/o Shri P.K. Doogar,
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-56896

SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Kolkata - 700 007, Ph: 239-1408

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
203 /1 M. G. Road, Kolkata - 700 007
Ph: (O) 238-9356/0950 (Fact). 557-1697/7059

COMPUTER EXCHANGE
Park Centre' 24 Park Street
Kolkata - 700 016, Ph: 229-5047, 9110

C. H. SPINNING & WEAVING MILLS PVT. LTD.
Bothra ka Chowk, Gangasahar, Bikaner

SUNDERLAL DUGAR
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazar Street, Kolkata - 700 001
Ph: 248-5146/6941/3350, Mobile: 9830032021
Office: Tobacco House
1/2, Old Court House Corner
Kolkata -700 001, Ph: 220-2389/3570/3569

SURENDRA SINGH BOYED
Sovna Apartment
15/1 Chakrabaria Lane
Kolkata - 700 026
Phone : 476-1533

MUSICAL FILMS (P) LTD
9A, Esplanade East
Kolkata - 700 069

ABL INTERNATIONAL LTD.
1, Shakespeare Sarani, Kolkata - 700 071.
Ph: 282-7615/7617/2726
Gram : Sudera

SHIV KUMAR JAIN
"Mineral House"
27A, Camac Street, Kolkata - 700 016
Phone : (Off) 247-7880, 247-8663
(Res) 247-8128, 247-9546

DELUXE TRADING CORPORATION
Distinctive Printers
36, Indian Mirror Street Kolkata - 700 013
Ph: 244-4436

PRADIP KUMAR LUNAWAT
P-44 Dr. Sundari Mohan Avenue
Kolkata - 700 014, Phone : 249-0103

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road
Kolkata - 700 001 Ph: 235-2076, 235-5701

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No.4
Kolkata - 700 071, Ph: 2296256/8730/1029
Resi: 247 6526/6638/2405126
Telex: 021 2333, ARBI IN, Fax : 226 0174

DR. NARENDRA L. PARSON & RITA RARSON
18531 Valley Drive
Villa Park, California 92667 U.S.A.
Phone : 714-998-1447714998-2726
Fax : 7147717607

SPACE & WINGS
Travel Agents
Domestic & International Airlines
Phone : 242-7806/8835/5852
10, Dr. Rajendra Prasad Sarani (Clive Row)
1st Floor, Kolkata - 700 001 Fax : 242 8831
P.S.A. Biman Bangladesh Airlines

RAJIB DOOGAR
305, East Tomaras Avenue
Savoy, IL 61874-9495
USA
Phone : 001-217-355-0174/0187
e-mail : doogar@uiuc.edu

H. R. ELECTRONICS
Dealers in Electrical Switch gear, starter & spare Parts
Siemens, English Electric L.T./L.K.B.C.H., etc.
32, Ezra Street, 7th Floor, Room No -712A
South Block, Kolkata - 700 001
Room No.- 314, 3rd Floor
Phone : (O) 235 5009/1299, (R) 660-4332

BOTHRA & BOTHRA
12, Noormal Lohia Lane
2nd Floor, Kolkata - 700 007
Phone : (Shop) 230 0216, (R) 235 9657/9312

CHUNILAL ASHOK KUMAR
30, Cotton Street, 3rd Floor, Kolkata - 700 007
Phone : 238 7764, (R) 666 4541, 530 9286

ASHOK TRADING COMPANY
Authorised Dealers of
J. K. Steel File. Drills. I. T. Drills. Tapes Center
BIPICO - ECLIPSE Hacksaw Bledes
"FREEMANS" GK Measuring Tapes, 18/C Sukeas Lane,
Kolkata - 700 001, Phone : 242-2345, 242-4461

D. K. SYNTHETICS
Whole Sale Dealer
180, Mahatma Gandhi Road
Mullick Kothi, 1st Floor, Kolkata - 700 007
Phone : (Shop) 232 6040, (R) 684181

JAI CHAND VINOD KUMAR
Exclusive Wholesaler of Fancy Sarees
1/1, Noormal Lohia Lane, 2nd Floor, Kolkata - 700 007
Phone : 238 3328/9678, 239 3450
Fax : 239 3450, 247 7526
Telex : 217761 JVS-IN Grams MINNI-BROS

SUBHASH & SUVRA KHERA
6116, Prairie Circle
Mississauga LS N5Y2
Canada
Phone : 905-785-1243

S. VIJAY CHAND
Vijay Textiles
Whole Sale Merchants
113B Manohar Das Katra, Kolkata - 700 007
Phone : (Shop) 238 1388 (R) 247 6105/2750
'Guddi' 10, Jamunalal Bajaj Street
2nd Floor, Kolkata - 700 007

BOTHRA SHIPPING SERVICES
2, Clive Ghat Street, (N. C. Dutta Sarani)
2nd Floor, Room No. 10, Kolkata - 700 001
Fax No. 220-6400 Ph: 220-7162
e-mail: sccbss@cal2.vsnl.net.in

N. K. JEWELLERS
Valuable Stones, Silver wares
Authorised Dealers: Titan, Timex & H. M. T.
2, Kali Krishna Tagore Street (Opp. Ganesh Talkies)
Kolkata - 700 007 (Phone : 239-7607)

अ angan
Rajasthan Village Theme Resturant at Swabhumi
89/c, Narkeldanga Main Road, Kolkata - 700 054
Phone : 359 2031, e-mail : www.jiggis.com

PRITAM ELECTRIC & ELECTRONIC PVT. LTD.
Shop No. G- 136, 22, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 073
Phone : 236-2210

MAHENDRA TATER
147, M. G. Road
Kolkata - 700 007
Phone : 227-1857

RABINDRA SINGH NAHAR
40/4A, Chakraberia South, Kolkata - 700 020
Phone : (O) 244-1309, (R) 475-7458

जो हिंसात्मक प्रवृत्ति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं
WITH BEST WISHES

VEEKEY ELECTRONICS
36, Dhandevi Khanna Road
Kolkata - 700 054
Ph: 352-8940/334-4140
(Resi) 352-8387/9885

MAUJIRAM PANNALAL
Citizen Umbrellas
45, Armenian Street, Kolkata - 700 007
Phone : (Shop) 242-4483/9181, (O) 238-1396/1871
Fax : 231-2151/666-6013

BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA
D. C. Group Pvt. Ltd, Sagar Estate, 5th Floor
2, Clive Ghat Street, Kolkata - 700 007
Phone : 220-4779/0131/5721

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street, 2nd Floor,
Kolkata - 700 007, Phone : (033)230-1329, 232-1033
Fax : 91-33-2302413

MANIK CHAND MANOJ KUMAR
11, Clive Row, 3rd Floor, Room No. 4,
Kolkata - 700 001, Phone : 242-4131/4756

ELECTO PLASTIC PRODUCTS PVT. LTD.
22 Rabindra Sarani, Kolkata - 700 073
Phone : 236-3028, 237-4039

KRISHNA JUTE COMPANY
Jute Broker & Dealer
9, India Exchange Place
Kolkata - 700 001
Phone : 220-0874/9372/221-0246

LILY SUKHANI
7, Bright Appartment, 7 Bright Street
Flat No. 7 C.
Kolkata - 700 019
Phone : 287-0448

ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।

KUSUM CHANACHUR

Founder: Late Sikhar Chand Churoria

Our Quality Product of Chanachur.
Anusandhan , Raja,
Rimghim, Picnic,
Subham, Bhaonagari Ghantia,

卐

Manufactured By
M/s. K. C. C. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Pin - 742122
Dist: Murshidabad
Phone: Code: 03483 No.: 53232
Cal. Phone: No.: 033 2300432, 522-1580

28 water supply schemes
315,000 metres of pipelines
110,000 kilowatts of pumping stations
180,000 million litres of treated water
13,000 kilowatts of hydel power plants

(And in place where Columbus would have feared to tread)

SPML

Engineering Life

SUBHASH PROJECTS & MARKETING LIMITED

113 Park street. Kolkata 700 016

Tel : 229 8228. Fax : 229 3882. 245 7562

e-mail : info@subhash.com. website: www.subhash.com

Head Office: 113 Park Street. 3rd floor. South Block. Kolkata-700016 Ph:(033)229-8228.
Registered Office: Subhash House. F-27 2 Okhla Industrial area. Phase II New Delhi-110 020
Ph: (011) 692 7091-94. Fax (011) 684 6003. Regional Office: 8 2 Ulsoor Road.
Bangalore 560-042 Ph: (080) 559 5508-15. Fax: (080) 559-5580.

Laying pipelines across one of the nation's driest region. braving temparature of 50° C.

Executing the entire water intake and water carrier system including treatment and allied civil works for the mammoth Bakreswar Thermal Power Project.

Bulling the water supply. fire fighting and effluent disposal system with deep pump houses in the waterlogged seashore of Paradip.

Creating the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metres. no less.

Building a floating pumping station on the fierce Brahmaputra.

Ascending 11,000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-electric plant.

Delivering the impossible. on time and perfectly is the hallmark of Subhash Projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare. then alone you do. Resulting in a string of acheivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment. we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design. Construction work or construction management. Be it environmental. infrastructural. civil and power projects. The truth is we design. build. operate and maintain with equal skill. Moreover. we follow the foolproof Engineering. Procurement and Construction System. Simply put. we are a single point responsibility. A one stop shop.

So. next time. somebody suggests that deserts by definition connote dryness. you recommend he visit us for a lesson in reality.

In
Loving Memory of their parents

Late, Shree Phool chandji Kharad
&
Late, Smt. Narangi Devi Kharad

卐

From :-

M/s Phool Chand Kharad & Sons
21, Kali Krishna Tagore Street
Kolkata - 700 007
Phone : 233-1609, 239-8628

शस्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
सारांश कि अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Kolkata - 700 071

Phone:

Gram "GANGJUTMIL" 226-0881
Fax: + 91-33-245-7591 226-0883
Telex: 021-2101 GANG IN 226-6283
226-6953

Mill

BANSBERIA

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 634-6441/644-6442
Fax: 6346287

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का हैं।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanskrit College, Kolkata

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.

(Formerly: Laxman Singh Jariwala)

Balwant Jain - Chairman

卐

A - 42, Mayapuri, Phase - 1, New Delhi - 110 064
Phone: 514-4496, 513-1086, 513-2203
Fax: 91-011-5131184
e-mail: laxmanjariwala@gems.vsnl.net.in

With Best Compliments.....

MARSON'S LTD

MARSON'S THE ONLY TRANSFORMER MANUFACTURER IN EASTERN INDIA EQUIPPED TO MANUFACTURE 132 KV CLASS TRANSFORMERS

Serving various SEB's Power station, Defence,
Coal India, CESC, Railways,
Projects Industries since 1957.

Transformers type tested both for Impulse/Short
Circuit test for Proven desing time and again.

PRODUCT RANGE

Manufactures of Power and Distribution Transformer
From 25 KVA to 50 MVA upto 132kv lever.
Current Transformer upto 66kv.
Dry type Transformer.
Unit auxiliary and stations service Transformers.

18, PALACE COURT
1, KYD STREET, KOLKATA - 700 016
PHONE: 229-7346/4553/226-3236/4482
CABLE-ELENREP TLX-0214366 MEL-IN
FAX-00-9133-225948/2263236

JAIN BHAWAN PUBLICATIONS

P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007

English :

1. Bhagavati-sutra-Text edited with English translation by K. C. Lalwani in 4 volumes:

Vol - 1	(satakas 1- 2)	Price : Rs.	150.00
Vol - 2	(satakas 3- 6)		150.00
Vol - 3	(satakas 7- 8)		150.00
Vol - 4	(satakas 9- 11)		150.00

2. James Burges - The Temples of Satrunjaya. Jain Bhawan. Kolkata ; 1977. pp. x+82 with 45 plates — Price : Rs. 100.00
   (It is the glorification of the sacred mountain Satrunjaya.)
3. P. C. Samsukha - Essence of Jainism translated by Ganesh Lalwani. — Price : Rs. 15.00
4. Ganesh Lalwani - Thus Sayeth Our Lord, — Price : Rs. 15.00
5. Verses from Cidananda Translated by Ganesh Lalwani — Price : Rs. 15.00
6. Ganesh Lalwani - Jainthology — Price : Rs. 100.00
7. Lalwani and S. R. Banerjee- Weber's Sacred Literature of the Jains — Price : Rs. 100.00
8. Prof. S. R. Banerjee Jainism in Different States of India — Price : Rs. 100.00
9. Prof. S. R. Banerjee Introducing Jainism — Price : Rs.

Hindi :

1. Ganesh Lalwani - Atimukta (2nd edn) Translated by Shrimati Rajkumari Begani — Price : Rs. 40.00
2. Ganesh Lalwani - Sraman Samskriti Ki Kavita, Translated by Shrimati Rajkumari Begani — Price : Rs. 20.00
3. Ganesh Lalwani - Nilanjana, Translated by Shrimati Rajkumari Begani — Price : Rs. 30.00
4. Ganesh Lalwani - Chandan-Murti Translated by Shrimati Rajkumari Begani — Price : Rs. 50.00

5.	Ganesh Lalwani-Vardhaman Mahavira	Price : Rs.	60.00
6.	Ganesh Lalwani-Barsat ki Ek Raat,	Price : Rs.	45.00
7.	Ganesh Lalwani -- Panchdasi.	Price : Rs.	100.00
8.	Rajkumari Begani-Yado ke Aine me.	Price : Rs.	30.00
9.	Smt. Lata Bothra - Bhagavan Mahavira Aur Prajatantra	Price : Rs.	15.00
10.	Smt. Lata Bothra - Sanskriti Ka Adi Shrote, Jain Dharm	Price : Rs.	24.00
11.	Prof. S.R. Banerjee - Prakrit Vyakarana Praveshika	Price : Rs.	20.00

Bengaii :

1.	Ganesh Lalwani-Atimukta,	Price : Rs.	40.00
2.	Ganesh Lalwani-Sraman Sanskriti ki Kavita	Price : Rs.	20.00
3.	Puran Chand Shymsukha-Bhagavan Mahavir O Jaina Dharma.	Price : Rs.	15.00
4.	Prof. Satya Ranjan Banerjee Prasnottare Jaina-Dharma	Price : Rs.	20.00
5.	Dr. Jagatram Bhattacharya Das Baikalik Sutra	Price : Rs.	25.00
6.	Prof. Satya Ranjan Banerjee Mahavir Kathamrita	Price : Rs.	20.00
7.	Sri Yudhishthir Majhi Sarak Sanskriti O Puruliar Purakirti	Price : Rs.	20.00

Some Other Publications :

1.	Smt. Lata Bothra - Vardhamana Kaise Bane Mahavir	Price : Rs.	15.00
2.	Smt. Lata Bothra - Kesar Kyari Me Mahakta Jain Darshan	Price : Rs.	10.00
3.	Smt. Lata Bothra - Bharat Me Jain Dharma	Price : Rs.	100.00
4.	Acharya Nanesh - Samata Darshan Aur Vyavhar (Bengali)	Price : Rs.	
5.	Shri Suyesh Muniji - Jain Dharma Aur Shasnavali (Bengali)	Price : Rs.	50.00
6.	K.C.Lalwani - Sraman Bhagwan Mahavira	Price : Rs.	25.00

अहिंसा ही परमफल है, परममित्र है, परम सुख है।

अहिंसा कायरों का नहीं वीरों का अस्त्र है।

arcadia shipping limited

We Own & Operator tramp service on

-M.V.ARCADIA PROGRESS (35224 DWT)

Besides Owing & Operating 8 Self Propeled + 1 Dumb Barges of between 550-1250 DWT.

We are Associates/General Agents in India for:

Winco Maritime Limited, London

-Puyvast Chartering BV., The Netherlands

-National Petroleum Construction Co., Abu Dhabi

******

We are agents at Mangalore for:

The Shipping Corporation of India Ltd.

(The Indian National Line)

******

Regd. & head Office:

222, Tulsiani Chambers Nariman point,

Mumbai-400 021.

Tel: 2831540/49, 2020416/418/2822765.

Fax: 2872664.

Tlx: 86567 ASPL IN / 83059 CONT IN, / CABLE: SHIPONTIME

E.Mail: vns@arcadiashipping.com

******

Offices at all major Indian Ports & New Delhi & Bangalore.

Tech/W.B./R.N.P.-45/2002
Vol. XXVI No. 8 TITTHAYARA November 2002
Registered with the Registrar of Newspapers for India
under No. 30181/77

ज्ञानी वही है जो किसी भी प्राणी की हिंसा न करें। सभी जीव जीना चाहते है मरना कोई नहीं चाहता अतः संसार के त्रस और स्थावर सभी प्राणियों को जाने या अनजाने में न मारना चाहिये, न दूसरों से मरवाना चाहिये, ना ही मन वचन काया से किसी को पीड़ा पहुँचानी चाहिये।

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions
17/3 Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 666 7212/7225